वर्ष 30 अंक : 6 5.12.2007 बुधवार (नवंबर – दिसंबर) प्रति अंक : 10.00

भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये

'अक्षरज्योति विशेषांक'

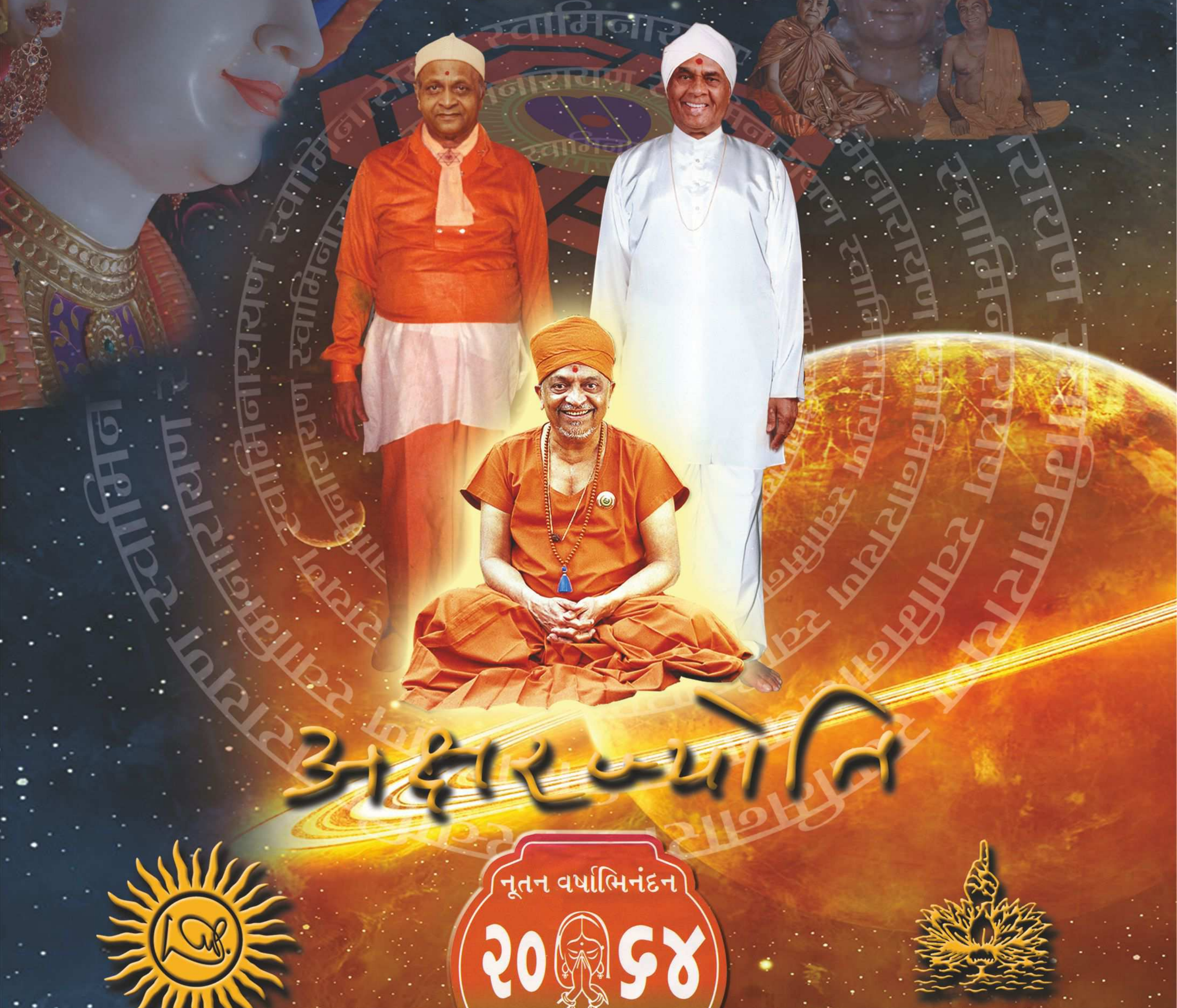

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥ शिक्षापत्री,११६

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञानं का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

'नैमिषारण्य' में मंदिर...

'एक गुलाब बने मेरा उपवन...' को चरितार्थ करता 'अक्षरज्योति' के भवन का उद्घाटन...

गुरुहरि योगीजी महाराज की आज्ञा से बहनों के भगवान भजने जैसे भगीरथ कार्य की शुरुआत करने हेतु ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी एवं प.पू. पप्पाजी के क्रांतिकारी कदम में पहल करने अक्षरधाम से ही आए **ब्रह्मस्वरूपीणी सोनाबा** एवं उनकी दो सुपुत्री **प.पू. ज्योति बहन** एवं **प.पू. तारा बहन** ने सर्वस्व समर्पण किया। प.पू. काकाजी व प.पू. पप्पाजी ने खूब गालियाँ खाईं, पर प्रभु के बल से, प्रभु के ही होकर प्रभु धार लेने की एकमात्र भावना से... अरे! तत्कालीन रूढ़िवादी समाज द्वारा तिरस्कृत होने के बावजूद निडर रह कर, भगवान भजने का केवल एक ही ध्येय लेकर वे चले, तो कई बहनों को प्रभु के मार्ग पर अग्रसर करने १९६६ से **'गुणातीत ज्योत'** के रूप में आज महिला केन्द्र खड़ा है।

दूसरी ओर – जहाँ कोई 'स्वामिनारायण संप्रदाय' के बारे जानता तक नहीं था, वहाँ सर्वप्रथम ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी के वचन से भगवान स्वामिनारायण का संदेशा फैलाने १९६९ में प.पू. गुरुजी दिल्ली पधारे। और... **'भारत साधु समाज' से 'श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर'**, ताड़देव-अशोकविहार **तक की प.पू. गुरुजी की यात्रा का संपूर्ण चित्रण श्रीजी महाराज द्वारा निर्दिष्ट कौटुंबिक भावना पर खड़ा उत्तर भारत का नूतन गुणातीत समाज दे रहा है। और... मानो साथ देने प.पू. गुरुजी के प्रति आत्मा के खिंचाव व प्रीति के वश प.पू. दीदी ने प.पू. काकाजी के वचन से उत्तर भारत में भगवान भजने की पहल करी!** पंजाबी परिवार से होने के बावजूद एवं जहाँ लड़कियों के 'संतनी' होने की बात से ही परिवार के सदस्य उत्तेजित हो जाएं – ऐसे माहौल में **खूब सह करके प.पू. दीदी ने मानो अंधेरे में ही छलाँग लगाई।** तब तो **'अक्षरज्योति'** नाम का ही अस्तित्व नहीं था, तो भवन की तो बात ही कहाँ रही? सच, दिल्ली गुणातीत समाज में यह एक अनूठी एवं शौर्यभरी घटना कही जाए। **यूं, प.पू. काकाजी ने प.पू. दीदी के रूप में मानो 'अक्षरज्योति' की एक नींव ही रखी थी।** वह कार्य पूर्ण होने में आख़िर बीस साल लगे!

और... वह शुभ घड़ी भी आ पहुँची, जब **शरद्-पूर्णिमा – मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी के प्रागट्य दिन, प.पू. स्वामिजी का भागवती दीक्षा दिन** एवं **प.पू. दिनकरभाई का प्रागट्य दिन** यानि – **२५ अक्तुबर को 'अक्षरज्योति'** के भवन **का उद्घाटन** होना निश्चित **हुआ**। हम सभी जानते हैं कि **गुणातीत स्वरूप निजी सेवकों को हमेशा कसनी में लेते हैं।** वह भी इसीलिए कि हम एक-दूसरे के पूरक बनें और पिंडीकरण हो। इसी का हुबहु दर्शन अब की बार भी हुआ। चूंकि उद्घाटन की तारीख पक्की हो चुकी थी; लेकिन, २२-अक्तुबर तक तो भवन निर्माण का कार्य देख कर ऐसा लगता ही नहीं था कि अभी दो दिन बाद तो इसका उद्घाटन है। फिर भी, दिन-रात एक करके सभी अपने-अपने कार्य में लगे ही रहे। अंतिम रात – यानि २४ अक्तुबर की रात तक तो ठाकुरजी के सिंहासन में मूर्तियों की सॅटिंग हो पानी मुश्किल लग रही थी, जबकि दूसरे दिन सायं तो प.पू. स्वामिजी के वरद् हस्तों उसकी आरती करवानी थी! आख़िरकार, केवल प्रभु का ही एकमात्र आधार और **'भजन'** के ही रामबाण उपाय से-जो कि अचूक कामयाब होता है, यूं मूर्तियों की सॅटिंग भी

हो गई! और... यह कार्य को पूरा करवाने प्रभु ने निमित्त बनाया कहो या प.पू. गुरुजी के प्रति अपनी भक्ति अदा करने की भावना से **पू. दीक्षा दीदी, पू. परछाईं दीदी, पू. बंसरी दीदी एवं पू. नित्या दीदी** पिछले दो महीने से जो खड़े पाँव दिन-रात लगे रहे, उसका भी यह सारा परिणाम था... उनकी भक्ति को कोटि-कोटि धन्यवाद!

इस अवसर पर आशीर्वाद देने नींव की ईंट समान **प.पू. ज्योति बहन** व **प.पू. देवी बहन, हरिधाम से प.पू. सर्वेश्वर बहन** व **पू. सुमन बहन** २४ अक्तुबर की दोपहर को दिल्ली आ पहुँचे थे। २४ की रात को **प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, पू. घनश्यामभाई अमीन, पू. हेमंतभाई मर्चंट** के साथ **प.पू. योगिनी बहन** तथा **लंदन वाले पू. शांताबा** भी दिल्ली मंदिर आ गए थे। सो, २५ अक्तुबर की सुबह ताड़देव मंदिर से **श्री हनुमानजी** व **श्री गणेशजी** की मूर्ति एवं कलश लेकर प.पू. ज्योति बहन, प.पू. देवी बहन, प.पू. दीदी, प.पू. सर्वेश्वर बहन-पू. सुमन बहन एवं पू. योगिनी बहन की निश्रा में दिल्ली गुणातीत समाज की सभी बहनों-भाभियों ने धुन-भजन-गरबा करते हुए 'अक्षरज्योति' भवन के प्रवेशद्वार पर **प.पू. ज्योति बहन द्वारा रिबन कटवा कर प्रवेश किया।** यूं, **दिल्ली मंदिर के इतिहास में आज एक नई कड़ी और जुड़ गई!** अक्षरज्योति भवन की रसोई **'तपस्या'** में प.पू. ज्योति बहन के वरद् हस्तों कलश रखा गया। भजन के नाद से सारा भवन गूंज उठा। प.पू. ज्योति बहन, प.पू. देवी बहन व साथ में उपस्थित सभी मुक्तों ने पूरे भवन में चरण डाले-प्रसादी के पुष्प छिड़के और फिर प्रसाद के लिए मंदिर की ओर प्रस्थान किया।

सायं की विधि के लिए पाँच बजे तक सभी मुक्त मंदिर में एकत्रित हो गए थे। आज के लिए खास तौर पर फूलों द्वारा सुसज्जित रथ तैयार किया गया था। सो, गुरुहरि प.पू. स्वामिजी के मंदिर पधारने के बाद उन्होंने व प.पू. गुरुजी ने सभी की भावना स्वीकार करते हुए रथ पर आसन ग्रहण किया। मानो एक छोटे आनंदोत्सव का माहौल बन गया। सबसे आगे छोटी लड़कियाँ कलश लेकर चल रहीं थीं। उनके पीछे भाभियाँ गरबे करते हुए भगवाधारी बहनों का मानो स्वागत कर रही थीं। इसी प्रकार रथ के समक्ष युवकों व हरिभक्तों का समूह 'भांगड़ा' इत्यादि से स्वागत करते हुए प.पू. स्वामिजी व प.पू. गुरुजी के रथ को 'अक्षरज्योति' भवन के द्वार पर ले गया और... यहाँ आतिशबाजियों से आकाश जगमगा उठा।

भवन में प्रवेश करने के बाद **प.पू. स्वामिजी ने** पूरे भवन में पुष्प वर्षा करी और **प्रार्थना हॉल 'नैमिषारण्य' के दरवाजे पर रिबन काट कर प्रवेश किया।** तत्पश्चात् प.पू. स्वामिजी, प.पू. गुरुजी एवं प.भ. मल्कानी अंकल जैसे उपस्थित मुक्तों ने श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज एवं सभी गुणातीत स्वरूपों की आरती करी। और... शरद्पूर्णिमा की कहो या 'अक्षरज्योति' में प्रवेश की सभा का **'नैमिषारण्य'** में आरंभ हुआ। सभा की शुरुआत में स्वरूपों एवं वडील मुक्तों का हार व कलगी से स्वागत करके उन्हें कॅलेन्डर के रूप में स्मृति भेंट दी।

प.पू. दीदी के शब्दों में –

श्रीजी महाराज ने अपने समय में आजीवन भगवान भज कर 'एकांतिक धर्म' सिद्ध करती स्त्रियों को सराहा है। उस समय जीवुबा, लाडुबा, रामबाई, लाधीबा, झमकुबा जैसी कई बाईयों ने भगवान भजने का मार्ग अपनाया। और... ब्रह्मस्वरूप गुरुहरि योगीजी महाराज की यह मर्जी जान कर – उन्हीं की आज्ञा से प.पू. काकाजी ने स्त्रियों को भगवान भजवाने की राह खोल देने फिर पहल करी, जिसमें प.पू. पप्पाजी ने कंधे से कंधा मिला कर साथ दिया। प.पू. काकाजी तो कहते भी कि – ***पप्पाजी साथ थे, तो ही मैंने***

यह कार्य उठाने की हिम्मत करी!

*सो, **एकदेशस्थ ज्ञान** से यदि हम ये कहें कि– **'केवल प.पू. काकाजी ने बहनों के भगवान भजने के कार्य का बीड़ा उठाया'**, वह हमारी भारी भूल होगी। इसी प्रकार, दूसरी ओर कोई कहे कि– **'केवल प.पू. पप्पाजी ने बहनों के भगवान भजने के कार्य को किया'**, तो वह भी प.पू. काकाजी की उपेक्षा-अवहेलना होगी। हम यह कभी भूलें नहीं कि बहनों को भगवान भजने की हमारी मातृसंस्था **'गुणातीत ज्योत' जुगलबंधु प.पू. काकाजी और प.पू. पप्पाजी का संयुक्त सर्जन है।** पर, इन्हें एक-दूजे से पृथक्-अलग जान कर, इनमें तारतम्यता रखते हुए अंग्रेजों की भांति हम यदि इस सच्चे इतिहास को मचेड़ने का प्रयास करेंगे, तो इन स्वरूपों को तो कोई फर्क पड़ने वाला नहीं है, पर घाटा हमें ही होने वाला है। और... इससे भी अधिक, हम प्रभु के गुनाहगार बनेंगे।*

***१९७५** के नवेंबर में लिखे – **'मुद्दे का काम'** उठाने के पत्र में **प.पू. काकाजी** ने इस बारे **'चेतावनी'** भी दी है कि –*

'जो फर्क रखेंगे, उसे आख़िरकार परेशानी रहने वाली ही है।' *(ब्रह्मप्रवाह - **पृ. ७७**)*

*इस मर्म को प्रगट करते हुए **इस कॅलेन्डर में** श्रीजी महाराज-मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंद - स्वामिजी, ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज - ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज और..... **जुगलबंधु प.पू. काकाजी एवं प.पू. पप्पाजी के चरणार्विंद में हमारे प्यारे-प्यारे प.पू. गुरुजी** – जिन्होंने हमें **एकांतिकी भक्ति में अनिवार्य** यह **'सर्वदेशीय'** रीति-नीति सिखा कर 'गुणातीत अस्मिता' का परिचय दिया – इतना ही नहीं, मंदिर के भी सारी प्रवृत्तियों को एक ओर रख कर इस भवन का निर्माण कर दिया – **उनकी मूर्ति बिठाई है।***

'गुजराती' भाषा में प.पू. दीदी के ये **उद्गार** तो मानो अंतर को झंझोड़ देते हैं –

શ્રીજી મહારાજે પોતાના સમયમાં આજીવન ભગવાન ભજવાના માર્ગે ચાલી 'એકાંતિક ધર્મ' સિદ્ધ કરતી સ્ત્રીઓને બિરદાવી છે. તે સમયે જીવુબા, લાડુબા, રામબાઈ, લાધીબા, ઝમકુબા જેવી કંઈ કેટલી બાઈઓએ ભગવાન ભજવાનો માર્ગ અપનાવ્યો. અને... બ્રહ્મસ્વરૂપ ગુરુહરિ યોગીજી મહારાજની આ મરજી જાણીને — એમની આજ્ઞાથી પ.પૂ. કાકાજીએ સ્ત્રીઓને ભગવાન ભજવા માટે માર્ગ મોકળો કરી આપવા ફરી પહેલ કરી, જેમાં પ.પૂ. પપ્પાજીએ ખભે ખભો મેળવી સાથ આપ્યો. પ.પૂ. કાકાજી તો કહેતા પણ કે –

પપ્પાજી સાથે હતાં, તો જ મેં આ કામ ઉપાડવાની હિંમત કરી!

*એટલે, એકદેશસ્થ જ્ઞાને કરીને જો આપણે એમ કહીશું કે– **'કેવળ પ.પૂ. કાકાજીએ બ્હેનોને ભગવાન ભજવાના કાર્યનું બીડું ઝડપ્યું'**, તે એ આપણી ભયંકર ભૂલ થશે. એવી જ રીતે, બીજી બાજુ કોઈ કહે કે– **'કેવળ પ.પૂ. પપ્પાજીએ બ્હેનોનું ભગવાન ભજવાનું કાર્ય કર્યું'**– તો એ પ.પૂ. કાકાજીની ઉપેક્ષા-અવગણના જ થશે. આપણે ક્યારે ય ભૂલીએ નહીં કે બ્હેનો માટે ભગવાન ભજવા ઊભી કરેલી આપણી માતૃસંસ્થા **'ગુણાતીત જ્યોત' એ પ.પૂ. કાકાજી અને પ.પૂ. પપ્પાજીની બંધુબેલડીનું સંયુક્ત સર્જન છે.** પણ, એમને એક-બીજાથી જુદા માની, એમનામાં તારતમ્યતા રાખીને અંગ્રેજોની જેમ, જો આપણે આ સાચા ઇતિહાસને મચેડવાનો પ્રયાસ કરીશું, તો આ સ્વરૂપોને તો કોઈ ફેર પડવાનો નથી, પણ ખોટ આપણને જ જવાની છે. અને... એથી ય વિશેષ,*

આપણે પ્રભુના ગુન્હેગાર થઈશું.

***૧૯૭૫**ના નવેંબરમાં લખેલા **'મુદ્દાનું કામ'** ઊપાડવાના કાગળમાં **પ.પૂ. કાકાશ્રીએ** આ અંગે **'ચેતવણી'** ય આપી છે કે –*

***'જે ભેદ રાખશે તેને અંતે મુંઝવણ રહેવાની જ છે.'** (બ્રહ્મપ્રવાહ-**પૃ.૭૮**)*

*આ મર્મને છતો કરતા થકાં **આ કૅલેન્ડરમાં** શ્રીજી મહારાજ - મૂળ અક્ષરમૂર્તિ ગુણાતીતાનંદ-સ્વામિજી, બ્રહ્મસ્વરૂપ શાસ્ત્રીજી મહારાજ-બ્રહ્મસ્વરૂપ યોગીજી મહારાજ અને... **બંધુબેલડી પ.પૂ. કાકાજી અને પ.પૂ. પપ્પાજીના ચરણાર્વિંદમાં અમારાં અત્યંત પ્રિય એવા પ.પૂ. ગુરુજી** કે જેમણે અમોને **એકાંતિકી ભક્તિમાં અનિવાર્ય** આ **'સર્વદેશીય'** રીતિ-નીતિ શીખવાડીને 'ગુણાતીત અસ્મિતા'નો પરિચય આપ્યો છે– એટલું જ નહીં, મંદિરની બધી જ પ્રવૃત્તિઓને એક બાજુ મૂકીને આ ભવનનું નિર્માણ કરી આપ્યું – **એમની મૂર્તિ મૂકી છે.***

सभा के प्रारंभ में प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई ने आध्यात्मिक सूझ देते हुए आशिष प्रदान किए। तत्पश्चात् प.पू. गुरुजी ने तो मानो स्मृति देने एक अलग ही जेस्चर किया। उन्हें सभा में जो कुछ कहना था, वह यानि – 'अक्षरज्योति' का मानो पूरा इतिहास उन्होंने लिख कर रखा हुआ था। समय की अवधि व प.पू. स्वामिजी की परावाणी का भी हम सब को लाभ मिले – वह देखते हुए थोड़ा-थोड़ा बोलते हुए भी वे करीब सवा घंटा बोले! दिल्ली के सभी मुक्त आश्चर्य में ही थे। आज तो **ऐसा लग रहा था कि प.पू. गुरुजी अपनी वाणी से हमें खचाखच भर देना या भीतर की उनकी ख़ुशी कहो या स्वरूपों व मुक्तों के माहात्म्य को संपूर्ण उड़ेल देना चाहते थे।** उनके इस रहस्य से या उनके भीतर के भावों से कोई वंचित ना रह जाए, इस हेतु प.पू. गुरुजी द्वारा लिखित हृदय के भावों को यहाँ 'हिन्दी' एवं 'गुजराती'▲ दोनों भाषा में हम शब्दशः प्रकट कर रहे हैं।

प.पू. गुरुजी द्वारा आशिष प्राप्त करने के बाद प.पू. स्वामिजी की परावाणी सभी ने ग्रहण करी। सभा के अंत में प.भ. मल्कानी अंकल ने आभार प्रगट किया और शरद्पूर्णिमा की आरती करने के बाद सभा का विर्सजन हुआ। प.पू. स्वामिजी, प.पू. गुरुजी, प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई तथा प.पू. ज्योति बहन, प.पू. देवी बहन एवं अन्य बहनों ने अक्षरज्योति के भवन में ही प्रसाद लिया और अन्य सभी हरिभक्त मंदिर के परिसर में प्रसाद लेकर विदा हुए।

आइए, **'नैमिषारण्य से...'** शीर्षक अतंर्गत स्वरूपों एवं मुक्तों के आशीर्वाद एवं उद्‌गारों से अपनी झोली भर लें.....

✡✡✡

'नैमिषारण्य में...'

प.पू. गुरुजी –

सबसे पहले तो – पुरुषों की भांति बहनें भी स्वतंत्र रूप से आजीवन भगवान भज सकें, इस हेतु व्यवस्था कर देने स्वामिनारायण संप्रदाय में जिन्होंने गुरुवचन से एक क्रांतिकारी कदम उठा कर पहल करी, बदौलत अपमान सहे - गालियाँ खाईं और अंत में संस्था ने जिन्हें भगतजी की तरह 'विमुख' भी किया वो **'दादुकाका की'** के रूप में पहचानी जातीं **बहनों** की यह सेवा के लिए प.पू. काकाजी ने मुझे निमित्त बनाया एवं ब्रह्मस्वरूप

▲ ***प.पू. गुरुजी के हृदय के भावों को** शब्दशः **'हिन्दी'** एवं **'गुजराती' दोनों भाषा में पढ़ने के लिए 'नैमिषारण्य में...' शीर्षक अंतर्गत पृष्ठ ५ से १९** देखिए।*

प.पू. पप्पाजी की मूर्ति पधराने का बुद्धियोग और हिम्मत भी दी, उसके लिए उन्हीं के चरणों में कोटि-कोटि प्रणाम!

अहोहो! काकाजी को मेरे प्रति कैसा और कितना प्रेम की मेरा इतना पक्ष! और... इस बात को सोचते हुए पप्पाजी सहज ही याद आते हैं... विद्यानगर – रामकृष्ण मिशन के हॉल में पोषीपूनम की हमारी शिविरें होती थीं, तब एक बार वहाँ भरतजी और हिरनी के बच्चे का चित्र बताते हुए पप्पाजी ने मुझे कहा– ये काका और मुकुंद! आज इस बात का तथ्य-मर्म समझते हुए मेरी आंखें नम हो जाती हैं कि – वाकई, कैसी अप्रतिम प्रीति इन गुणातीत पुरुषों ने हमारे साथ करी है? हमारी पात्रता भी देखे-करे बिना वे आशीर्वाद बरसाते ही रहे और साथ – साथ गढ़ाई भी करते रहे। एक बार मैं मेरी कमियाँ खोलते हुए काकाजी के पास कुछ बात करने लगा, तब उन बातों को पूरी सुने बिना वे बीच में ही बोलेः

'तेरी सारी ही-संपूर्ण जिम्मेदारी मेरी है और तेरे द्वारा तो बड़े-बड़े सत्कर्म करवाने हैं। उसके बहाव में यह सब कहाँ धुल जाएगा उसका पता भी नहीं चलेगा।'

आज इसी तरह प.पू. स्वामिजी और प.पू. साहेब भी मेरा ख्याल रख रहे हैं। वर्ना आज तो शरद्पूर्णिमा! मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी का प्रागट्य पर्व और साथ ही प.पू. स्वामिजी का भागवती दीक्षा दिन; वहाँ हरिधाम में हज़ारों मुक्तों को आज उनकी स्थूल अनुपस्थिति खलती होगी ही। पर, प.पू. स्वामिजी ने इस अवसर पर यहां पधार कर, 'नैमिषारण्य' का उद्घाटन करके मूर्तियों की आरती करी और उन्होंने मुझे जो ढाँढस दी है, उसका तो आप किसी को अंदाजा भी नहीं आ पाएगा।

प.पू. साहेब – कि जिनका हाथ बापा ने प.पू. काकाजी को सौंपा था, वे आज वहाँ ब्रह्मज्योति पर 'गुरुसभा की स्वर्ण जयंती' के आयोजन की सभा के कारण यहाँ भले ही आ नहीं सके, फिर भी प.पू. काकाजी के संबंध से खास आशीर्वाद लिख कर भेजना भूले नहीं हैं। काकाजीस्वरूप पू. दिनकरभाई तो दूर से एकदम नहीं आ सकते, लेकिन उन्होंने भी आशीर्वाद पत्र लिखा ही है। विद्यानगर से प.पू. पप्पाजी स्वरूप ब्रह्मस्वरूपीणी प.पू. ज्योति बहन-प.पू. देवी बहन, हरिधाम के भक्तिआश्रम से प.पू. सर्वेश्वर बहन-प.पू. सुमन बहन और इसी प्रकार मुंबई से प.पू. भरतभाई-प.पू. वशीभाई और मुक्तों एवं पू. योगिनी बहन भी जानकारी होते ही दौड़े आए। आत्मीयता का – आत्मबुद्धि और प्रीति का-कुटुंबभाव का यह एक दर्शन ही है और इसे ही तो गुणातीतानंदस्वामिजी ने ***'सत्संग'*** कहा है। तो, उनकी इस जीवनशैली को हममें ढालने की अभीप्सा करें-प्रार्थना करते रहें।

वाकई! काकाजी और पप्पाजी कैसी समर्थ और भव्य विभूतियाँ कि इन्होंने प्रकृति के रूपांतर का यह भगीरथ कार्य करके आजीवन ब्रह्मचर्यव्रत धार कर भगवान भजने की पहल करने वाली **'जीवुबा-लाडुबा'** की याद दिलाती और महाराज ने स्वयं जिनके लिए वचनामृत अंत्य. २६ में ***'भगवान की तरह सेवा करने योग्य साधु गुणों से युक्त बाईयाँ'*** कह कर नवाज़ा, ऐसे एकांतिक स्त्रीरत्न दिए!

यूं, बहनें भी **भगवान को भज कर** ऐसी एकांतिकी स्थिति को प्राप्त कर सकती होंगी, तब ही महाराज के ये उद्गार होंगे ना?

और... प.पू. काकाजी तो कई बार कहते भी कि ये हरिप्रसादस्वामी भी बापा की यह मर्जी को जान कर बहनों

के हमारे कार्य में हमारे साथ खूब खड़े रहे!

आज ऐसे प.पू. स्वामिजी का भागवती दीक्षा दिन है! स्वामिजी का चैतन्यलक्षी क्रियाकलाप-उनकी शूरवीरता-उनका निर्मानीभाव-उनका निरपेक्ष प्रेम-उनका बृहद् वैराग्य-उनका सूक्ष्म तप-उनकी दिव्यता-उनकी आत्मीयता-उनका औदार्य-उनकी विशालता-उनका वात्सल्य-उनकी प्रभुता और उनकी साधुता जैसे उनके अनंत कल्याणकारी गुणों का परिचय देते प्रसंगों के तो मेरी अपेक्षा निजी-निकटवर्ती सेवक और मुक्त ज्यादा जानकार होंगे। फिर भी, मैं मानता हूँ कि – इससे ऐसे पुरुषों की सम्यक् पहचान होनी बहुत मुश्किल ही है। लेकिन,

'महाराज ने जैसे गुणातीतानंदस्वामिजी को दीक्षा दी थी, ऐसी आज प्रभुदास को दी जाती है।'

यूं उन्हें दीक्षा देने की बेला पर कह कर बापा ने हमें उनकी पहचान दे ही दी है। और... **सबसे पहले प.पू. काकाजी ने इस बात को पकड़ कर स्वामिजी की यह महिमा अपने साथ जुड़े व अपने विश्वासी ऐसे हम जैसे सभी के दिमाग़ में भरी है-बिठाई है।** यूं यह तो **'आप्तवाक्य प्रमाण'** कहा जाए। इससे विशेष कोई प्रमाण की हमें जरुरत नहीं है।

फिर भी, प्रसंग पर हमारा मन हमें डगमगा ही देता है। लेकिन, वचनामृत मध्य ३५ में कहे महाराज के शब्दों पर हम गौर करें –

'...आप सभी को मेरा भरोसा है और मैं तुम्हें गलत राह पर चढ़ा दूं , तो जैसे कोई सभी को कुएँ में धक्का देकर ऊपर से पत्थर की बड़ी शिला ढक दे,जहां से बाहर निकलकर उबरने की कोई आशा ही ना हो ; यूं आप भी मेरे कहने पर, मेरे विश्वास से उल्टी राह पर चल पड़ो, उसमें भला मेरा क्या ठीक होगा?'

यूं, प.पू. स्वामिजी की पहचान देते बापा के वे उद्गार खोटे दिखावे के तो नहीं ही होंगे ना?

और... १३वें प्रकरण की ३५वीं 'स्वामी की बात' में है –

'जो संत अपने हृदय में महाराज को अखंड धार कर रहा है, वह (गुणातीत) संत ज्ञानी, ध्यानी, प्रेमी, (तपस्वी) से अधिक बड़ा है।'

फिर भी, हमें गुणों का प्रभाव पड़ जाता है? तभी तो फलां क्या कथा करता है? अरे! वो बोले तो सभी को spell bound कर दें। फलां की तो क्या प्रेमलक्षणा भक्ति है? कितने कठिन नियम-धरम हैं उसके? ऐसा कुछ-कितना हमारे मन को स्पर्श कर जाता है।

इससे भी विशेष तो उनके द्वारा-उनके कथनों द्वारा स्वामिजी को प्रमाणित ठहराने का हमारा बचपना जब दिखाई पड़ता है, तब प.पू. काकाजी जो बात करते कि– ***'शेर गीदड़ का हाथ पकड़ कर उसे कहे कि तू मेरी रक्षा करना '***-ऐसा मज़ाक लगता है।

स्वामी की यह बात इस तथ्य को भी उजागर करती है कि – भले कैसा ही ज्ञानी हो-ध्यानी हो-तपस्वी हो-प्रेमी हो, लेकिन फिर भी वह भगवान का अंखड धारक ना भी हो। जो ब्रह्मरूप हुआ हो-गुणातीतभाव को पाया हो, वही भगवान का-परब्रह्म का अखंड धारक हो सकता है। **गुणातीतभाव का यह प्रदेश ही अलग है** और **गुणातीत पुरुष के प्रसंग के सिवा गुणातीतभाव को कोई पा ही नहीं सकता।**

यही 'मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी' की पहचान की अनिवार्यता है कि उनकी परंपरा में से आई 'विभूति' के प्रसंग से ही जीव ब्रह्मरूप हो सकेगा; वर्ना होगा ही नहीं। दूसरे प्रभावों से सिद्धदशा के या ऐसे किसी प्रवाह में बह जाएंगे, जिस चक्कर से फिर निकलना मुश्किल ही नहीं - नामुमकिन हो जाएगा।

हम भूलें नहीं कि ये प.पू. स्वामिजी, प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. प्रमुखस्वामी महाराज, प.पू. महंतस्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. साहेबजी और प.पू. दिनकरभाई इस गुणातीत की परंपरा से आई प्रगट विभूतियाँ हैं।

मुझे ठीक से याद है और स्वामिजी को भी इस बात का ख्याल होगा। हम मुंबई - अक्षरभुवन में थे। तब कुछ बड़ों ने 'चिन्मयानंदस्वामिजी के गीता प्रवचन' सुनने जाने का हम संतों के लिए प्रोग्राम बनाया था। वह प्रोग्राम को attend करके हम आए - करे और प.पू. बापा के पास वह बात पहुँची। तब, 'वहाँ तो महिलाएँ श्लोक गाती हों और हम संतों को नहीं बैठना चाहिए' यूं कह कर बापा ने हम सभी को एक दिन का उपवास - व्रत करने का प्रायश्चित दे दिया! दूसरे दिन इस बारे मेरे साथ कुछ बात करते हुए पप्पाजी हँसी - विनोद में बोले – 'मिला ना लड्डू, चिन्मयानंदजी के प्रवचन का?' मैंने कहा – वहाँ महिलाएँ थीं, सो बापा ने सभी को उपवास - व्रत दिया। पप्पाजी तुरंत बोले – उन महिलाओं की वजह से नहीं, उनकी ओर तो तुम्हारी किसी की नज़र भी नहीं गई होगी; लेकिन **वचनामृत और स्वामी की बात के सिवा और प्रभाव में क्यों आए?** उसकी फटकार दी है बापा ने! यूं बापा की मर्जी के ऐसे कई रहस्य - कई मर्म प.पू. काकाजी की भाषा में – उनके झमूरे बने काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी जैसों के संबंध से समझ में आए हैं और बापा ने भी तो हमें उनका ही संबंध दे दिया है।

अरे! प.पू. काकाजी का नाम मिटाए बिना अक्षरपुरुषोत्तम संस्था का भी इतिहास कोई कहे या लिखे तो ख्याल आएगा कि तब जिस प्रकार एक रूढ़ि से भेड़चाल का सत्संग जो चलता था, उसे काकाजी ने ही एक नई दिशा दी थी। बापा को एक नया उठाव लेना ही था, सो प.पू. काकाजी जैसी शूरवीर विभूति को पसंद करके उन्हें साक्षात्कार करवा कर अपनी तत्त्व से – सम्यक् पहचान करवाई। तब से प.पू. काकाजी ने जोर शोर से बिगुल ही बजाया कि –

'योगीजी महाराज एक सामान्य साधु नहीं, बल्कि महाराज का भव्य स्वरूप हैं। शास्त्रीजी महाराज गए ही नहीं, योगीजी महाराज द्वारा प्रगट ही हैं।'

काकाजी के इस उद्घोष से पहले बापा को सभी ***'बहुत अच्छे - भले साधु'*** ही मानते और बापा भी सभी के पास दासभाव से ही वर्तते। अरे! सभी की ही आज्ञा में रहते - सभी की सेवा किया करते! प.पू. काकाजी ने ही तत्कालीन समाज को एक दृष्टि दी कि ***हमारी मर्जी में बापा को नहीं चलाना है, बल्कि हमें उनकी आज्ञा में रहना है।***

१९५४ - ५५ - ५६ के वर्षों में मैंने देखा है और स्वामिजी ने भी देखा होगा कि कपोलवाड़ी में बापा, मोटास्वामी, संतस्वामी, प्रमुखस्वामी महाराज, वकीलस्वामी वगैरह एक गद्दे पर इकट्ठे ही बैठते थे। संतमंडल मुंबई आता, तब बापा भी सभी के साथ अपना पोटला खुद उठा लेते थे। आज तो छोटे - छोटे संतों को भी हरिभक्त कुछ उठाने - करने नहीं देते। प.पू. काकाजी ने ही बापा का आसन अलग करवाया था। बड़े पैमाने पर 'बापा

की जयंती' भी सबसे पहले प.पू. काकाजी ने 'सारंगपुर' में मनवाई थी।

यूं प्रगट स्वरूप और मुक्तों की महिमा का साक्षात्कार आज जो दिखाई दे रहा है, वह प.पू. काकाजी की देन है।

तब का माहौल देख कर आफ्रिका से सारंगपुर के इस उत्सव में आए मोम्बासा वाले **प.भ. रविभाई पंडया** तक भी बोले थे –

'मुझे तो यह एहसास होता है कि इस सारे महात्म्य के मूल में दादुभाई हैं।'

५७-५८ से १९६६ की मई के आख़िर तक तो विचरण में-उत्सव में बापा प.पू. काकाजी को लगातार साथ ही रखते और कई बार तो प.पू. काकाजी मानो सुबह की ट्रेन से मुंबई लौटे हों और उसी दिन दस-साढ़े दस बजे बापा की डाक आ जाती कि ***'दादुभाई! तुम्हारे दर्शन की कमी खलती है।'*** और... बापा के पास पहुँचने के लिए रात के ही गुजरात मेल से या सौराष्ट्र मेल से प.पू. काकाजी लौट जाते!

यूं, उस समय तो गुणबुद्धि का व्यवहार प्रधान-संसार प्रधान सत्संग चलता था। पर, **प.पू. काकाजी के प्रवेश से सामूहिक रूप में आत्मबुद्धि और प्रीति युक्त संतप्रधान सत्संग करने की समाज को दिशा मिली।** पू. कांतिकाका के कुटुंब के साथ ऐसी आत्मबुद्धि और प्रीति से उन्होंने व्यवहार-कारोबार की शुरुआत करी थी कि उनसे प्रेरणा पाकर एक **'योगी परिवार'** पनपा, जो आज **'गुणातीत समाज'** के रूप में फला-फूला है।

बहनें भी भगवान भज पाएं उसकी latitude कर देने की बदौलत प.पू. काकाजी ने फिज़ूल की बेमतलब जो सुनी है, उसके साक्षी तो हम अभी बैठे भी हैं। **प.पू. स्वामिजी** भी बोले थे कि –

पहले तो काकाजी ही बहनों को बहुत बातें करते थे।

यूं प.पू. काकाजी ने हम सभी को नई-नई क्षितिजें खोल दी, उस ओर उंगली पकड़ कर चलना सिखाया और हम जब खुद चलने लगे, तो आगे-आगे हमारी ढाल बन कर रहे और आख़िरकार हमें स्वतंत्र एवं स्वाधीन किया। इसी का हम अब आनंद ले रहे हैं-सुख भोग रहे हैं। इनकी इस गाथा का आज एक नया पन्ना खुल रहा है – **'अक्षरज्योति के भवन का उद्घाटन'!**

'अक्षरज्योति' यानि ही – हमारी 'आनंदी'! वर्षों पहले किसी एक प्रसंग पर आनंदी को मैंने गुलाब के फूल वाले picture का छोटा सोविनियर भेजा था। उस पर writing है – ***'A single rose can be my garden'.*** कह सकते हैं कि आनंदी दीदी द्वारा उस भावना ने आज साकार रूप लिया है और यहाँ तेरह बहनें भगवान भजती हो गईं।

आनंदी का इतिहास भी एक शौर्यभरे साहस की कथा है। वह स्वयं तो प्रेम की-आत्मीयता की मानो एक nightingale ही है। इस बात का तो आप सभी को परिचय भी है। जब भी किसी को मिलेगी-हमेशा हंसती! इस बारे में अधिक कुछ कहूँ, वह अयोग्य ही माना जाए। गुजराती में कहते हैं ना कि दूल्हे का बखान कौन करे? दूल्हे की माँ! – ऐसा गिना जाएगा। सो, इस बारे मैं ज्यादा पिष्ट-पेषण नहीं करूंगा। वैसे भी सभी जानते हैं कि – आनंदी यानि? गुरुजी का प्यादा! मैं भी कहता हूँ – 'दीदी यानि? मेरा टॅप रॅकोर्डींग!' लेकिन भूलियो नहीं कि मेरी तरह ही दीदी स्वतंत्र मिजाज की हैं।

आनंदी ने भगवान ही भजने का निर्णय लिया, तब घर के विरोध की वजह से दिल्ली में उसे कहाँ रखनी वह एक प्रश्न था। लेकिन, तब प.पू. काकाजी स्थूल रूप से विद्यमान थे; सो उनकी आज्ञा से मुंबई गौरांग के यहाँ-वनलता के यहाँ, फिर पंढरपुर राधा अक्का के पास और वहाँ से साहिबाबाद आर.के. अग्रवालजी के यहाँ आकर रहीं। आख़िर पंजाब-सवद्दी कलां में प.भ. धरमपालजी के यहाँ छः महीने underground रह कर–दिल्ली वापिस आकर हमारे प.भ. विजयबाबु की बहन बन कर उनके घर से भगवान भजना शुरु किया। सच! धन्यवाद हैं विजयबाबु को कि वे ऐसी कशमकश के समय, समाज के डर व टीका चर्चा की तनिक भी परवाह किए बिना एक पराई जवान लड़की को उन्होंने अपने यहाँ पनाह दी! फिर तो स्मिता-गौरी-स्वाती-निष्ठा जैसे इस मार्ग पर चलने तैयार हुए और इस छोटे मंडल ने A-103 के मंदिर के सामने के 1-B जनता फ्लैट्स में रह कर आराधना ज़ारी रखी। लेकिन, तभी अचानक प.पू. काकाजी ने अपनी लीला समेट ली!

और... 'इन बहनों की जिम्मेदारी लेने की मेरी हैसियत नहीं'–यूं सोच कर इन्हें ज्योत में या हरिधाम की बहनों के साथ जोड़ने की पैरवी में मैं लगा रहा। परंतु ऐसा कोई मेल बैठ नहीं पाया। इसी दौरान इस बारे एक बार प.पू. साहेब के साथ कुछ बातचीत निकली, तो प.पू. साहेब एकदम बोले कि –

'ये लड़कियाँ प.पू. काकाजी से जुड़ी हुई थीं – उनके भरोसे घर से निकली हुई थीं; इसलिए यह जिम्मेदारी तुम्हें ही ले लेनी पड़े... उसमें आप एस्केपीज़म ना करना।'

प.पू. साहेब में से मानो प.पू. काकाजी ही मुझे डाँट रहे हों, ऐसा मुझे लगा... इस ओर दीदी भी बहनों-भाभियों में ओतप्रोत होती गईं–सेवा में लग गईं और... महिला प्रवृत्ति भी संभाल ली। भगवान भजती बहनों की संख्या एवं प्रवृत्ति बढ़ती गई; सो वे 'शक्ति एपार्टमेन्ट्स' में रहने लगीं।

अक्षरनिवासी **श्री एच.के.एल. भगत साहेब** को प.पू. काकाजी के प्रति खूब प्रीति थी ही। सो इन बहनों की व्यवस्था में खुद का योगदान देने की ही एक भावना से आऊट ऑफ धी वे जाकर D.D.A. से मंदिर के नज़दीक ही यहीं बहनों के लिए १९८९ में ज़मीन दिलवाई। ११९७ की साल में ब्रह्मस्वरूप प.पू. पप्पाजी ने इस जमीन पर भूमिपूजन किया था और आज करीब दस साल के बाद बहनों के लिए यह भवन तैयार हुआ है। इस निर्माण के लिए दस साल का समय, वैसे तो ज्यादा ही कहा जाए। परंतु, इस दौरान कुछ ऐसे प्रसंग बने–जैसे कि पू. दीदी का हार्ट ऑप्रेशन, मेरी बाईपास सर्जरी, परछाई का किडनी ट्रान्स्प्लान्ट–जिन के कारण निर्माण कार्य आगे ही खिंचता चला गया।

सचमुच, यहाँ के मुक्तों को खूब-खूब धन्यवाद है कि इन हर प्रसंग पर तो वे साथ में खड़े रहे ही, पर इससे भी अधिक खुद का-खुद की सगी बहनों का एक जरूरी काम रुका पड़ा हो, यूं अक्षरज्योति की चिंता भी करते रहे। पंजाब-जगरांव के हमारे पुराने जोगी–**महेन्द्र जयस्वाल** यहाँ आए भी हैं। २००१ की साल में उसने अपना मकान बनाने एक प्लाट खरीदा, परंतु वहाँ मकान बनाने का कोई कामकाज शुरु ही नहीं किया। मैं जब भी उससे पूछता कि मकान बनाने का मुहूर्त कब कर रहे हो? तो एक ही जवाब मिलता कि 'गुरुजी! पहले अक्षरज्योति बन जाने दें, फिर शुरु करते हैं' और... समय-समय पर वह लगातार अपना contribution भी भेजता ही रहता। हमारी **निशि के अनिलजी** ने अक्षरज्योति की सेवा के लिए ही आर्कीटॅक्ट का course

किया और D.D.A. की नौकरी को एक ओर रख कर, अक्षरज्योति का निर्माण कार्य संभाल लिया और मुझे निश्चिंत कर दिया। ऐसे तो किस-किस के नाम गिनवाऊँ?

अरे! जो खुद आर्थिक रूप से इसमें डायरेक्ट contribute नहीं कर सकते थे, ऐसे **छोटे बच्चे-युवक-लड़कियाँ-भाभियाँ** सभी रद्दी के हमारे अभियान में जुड़ गए। अच्छे-अच्छे घरों की ये महिलाएँ भी इस प्रकार घर-घर जाकर मांगने निकल पड़ती हैं, यह देख कर देने वाले भी दंग होकर उमंग से देते गए।

हमारे **पुरी साहेब** हैं। अभी-अभी ही बैंक से रिटायर्ड हुए हैं। हमारे साथ उनको खूब यानि – खूब लगाव है। उनकी सिन्सियारीटी-काबिलियत इत्यादि के कारण बैंक ने उन्हें २५-३० हज़ार की सॅलरी की ऍडवाईज़री जॉब के लिए दोबारा ऑफर नहीं, बल्कि आग्रह ही किया। लेकिन, उन्होंने देखा है कि गुरुजी को पढ़े-लिखे एक helping और responsible hand की खूब जरुरत है। सो, कुछ भी विचार किए बिना उन्होंने उस offer को ठुकरा ही दी! **यह है प.पू. काकाजी द्वारा यहाँ पनपा 'कुटुंबभाव'!**

स्वामिजी, हमने इस निर्माण के लिए या ऐसे किसी प्रसंगों पर भी आज तक रसीदें वगैरह फाड़ कर कभी भी चंदा इकट्ठा नहीं किया। आज भी यहाँ जो-जो आए हैं, इनमें से दो-पाँच जितने ही नए होंगे-बाकी के सभी तो एक-दूसरे से खूब ही परिचित; सो कुटुंबीजनों का मानो एक स्नेहमिलन-सा ही हो गया है।

पहले मेरा विचार ऐसा बना था कि हम सौ जितने जने ही इकट्ठे होकर आपके पास मूर्तियों की आरती करवा लें। परंतु, ये आनंदी – जिसे कहते हैं ना कि 'उसे सभी का बहुत।' उसमें से यह उत्सव खड़ा हो गया। आख़िर-आख़िर में तो हमारा **आशिष** भी उसके **'नक्षु'** को छोड़ कर दिन-रात देखे बिना इस कार्य में कूद ही पड़ा और **पू. दीक्षा, पू. परछाईं, पू. बंसरी** एवं **पू. नित्या** ने युद्ध स्तर पर काम उठवा लिया। तो 'येन केन प्रकारेण' हमारा यह संघ काशी पहुँच गया। **यह एक काम पूरा हो रहा है, इसका ही आज 'आनंद' नहीं है; पर जिस कुटुंबभाव से सबने मिल करके यह पूरा करा है, उसका 'हर्ष' है।**

मजे की एक बात करता हूँ। फंड के अभाव के कारण एक बार यहाँ काम रुका हुआ था। पता नहीं क्यों? लेकिन तब मुझे मन में ऐसा हुआ कि ये स्वामी, साहेब, ज्योति बहन सभी फॉरेन जाते-करते हैं – ऐसे मुझे भी अब एक चक्कर मार कर कुछ Dollars-Pounds समेट लाना चाहिए; ताकि इस कार्य का पार आए। और... आप मानोगे नहीं कि स्वामी – उसी दिन अचानक भरतभाई का सामने से फोन आया कि यहाँ **'पू. शांताबा'** आए हैं और अक्षरज्योति के लिए आनंदी को अच्छी सेवा दे रहे हैं। मैं तो ये 'शांताबा' कौन-यह कुछ जानता भी नहीं था; लेकिन वे भी इस अवसर आज यहाँ आ ही गए-जिनके द्वारा महाराज ने हमें पैसे भेज भी तो दिए थे!

लेकिन, बहनें भी **अब** खूब सावधान रहें; अब आप ज़ाहिर में आ गए। इसलिए तुम्हारी जिम्मेदारी खूब बढ़ जाती है। भूलना नहीं कि **'भगवान भजने'** ही हम इस रास्ते चले हैं। इसके अलावा और कोई उद्यम-प्रवृत्ति करनी ही नहीं है। दूसरा सब टाटा-बिरला-अंबाणी परिवार-मित्तल-बिल गेट्स जैसों के द्वारा महाराज कराते रहेंगे। वह क्षेत्र-वह sphere हमारा है ही नहीं। यह मेरा मानना है। **'भगवान साधने हैं और भगवान देने हैं'** – इसके सिवा कुछ भी करना नहीं है। ध्येय की यह स्पष्टता रखोगे तो आसानी रहेगी।

प.पू. काकाजी कहते कि अक्षरपुरुषोत्तम के सिद्धांत से भगवान भजने की शुरुआत ही धाम, धामी और मुक्तों के भजन से होती है। यानि – हमारे लिए इसके सिवा और कुछ 'सत्य' है ही नहीं। सो, प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूप में महाराज का प्राकट्य और उन्हें **सर्वोपरि** जान कर उनके संबंध वाले सभी में सुहृद्भाव व निर्दोषभाव के सिद्धांत से अपने परिवारजनों जैसी आत्मबुद्धि व प्रीति करना एवं दूसरों को कराते रहना। यह भावना जितनी फैले – ऐसे मुक्तों जितने तैयार हों, इतना 'सत्संग' बढ़ा कहा जाए। **यह एक ही धंधा हमें करना है।**
यदि याद हो तो – प.पू. काकाजी बोलते –

'इतने सालों से बापा की दुकान चला रहे हैं।'

हम भूलें नहीं कि – प.पू. काकाजी और प.पू. पप्पाजी को 'सत्संग' का एक स्पष्ट दर्शन था।
यह बात कह कर प.पू. काकाजी को अपना कोई ढिंढोरा नहीं पीटना था, ना ही अपनी डीगें मारनी थी। अब समझ में आता है कि वे हमें यह समझाना चाहते थे कि आप सब भी हमारी तरह **यही** चलाना। **'कुटुंबभाव का – आत्मबुद्धि व प्रीति का सत्संग'** ही बढ़ाते जाना। देखादेखी भी दूसरी राहों पर भटक मत जाना।
स्वामी की बातों में है कि –

यदि ज़मीनदार बड़ा हो तो जमीन खरीद-खरीद कर इकट्ठी करे, बनिया बड़ा हो तो अधिक पदार्थ इकट्ठा करे, ब्राह्मण बड़ा हो तो पुस्तक इकट्ठी करे और चरवाहा बड़ा हो तो गाय - भैंस - बकरियाँ इकट्ठी करेगा। पर क्या किसी ने एकांतिक भक्तों के टोले इकट्ठे करे हैं? और किसी में कोई माल नहीं है। सो ऐसे साधु का समागम कर लेना चाहिए और एकांतिक साधु बनना...'

मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी ने यह बात खुद की करी है। भगवान का वो भव्य स्वरूप; सो एकांतिकों के टोले इकट्ठे करने ही उन्होंने उद्यम किया है। हम भी बोलते हैं ना कि हमें भगवान का भव्य स्वरूप मिला! तो इसके सिवा दूसरा कुछ भी करके क्यों हम अपने गुरु को लज्जित करें? **स्त्री-पुरुष भाव से परे रहते हुए भी अपने नियम-मर्यादा में रह कर 'एकांतिक भक्त' बनें और इसी मार्ग पर ही सभी को ले जाने का उद्यम करा करें।**
प.पू. काकाजी यही बात अलग शब्दों में कहते कि – ***'स्पीरीच्युल टॅक्नीशियन्स ' बन कर ऐसे दूसरे तैयार करो।***

तो, बातों की बात आज यही करनी है कि इस ध्येय की ओर ही हम नज़र रखें और **'शुद्ध सत्संग'** ही करें। इसी मार्ग पर हम अग्रसर रहें ऐसे प.पू. स्वामिजी-ज्योति बहन आशीर्वाद बरसाएं – यही प्रार्थना। अंत में – स्वामिजी! आपने आज आरती करके मूर्तियों में प्राण भरे हैं। तो ऐसा एक संकल्प करके आशीर्वाद देकर जाना कि ये सभी बहनें हर प्रकार से निरामय-कुशल रहें और यहाँ आने वाले हर एक को शांति का अनुभव हो। हॉल के नाम के मुताबिक इस हॉल में बैठ कर भजन करने वाले को **'नैमिषारण्य'** का एहसास हो। **उसे यहाँ ही बैठे रहने का मन हो और भजन के बल से उसे उसकी हर समस्या का हल मिलता रहे...**

प.पू. गुरुजी के उपरोक्त आशीर्वचन का 'गुजराती' अनुवाद –

સહુ પ્રથમ તો – પુરૂષોની જેમ બ્હેનો પણ સ્વતંત્રપણે આજીવન ભગવાન ભજી શકે એ માટે એક વ્યવસ્થા કરી આપવા સ્વામિનારાયણ સંપ્રદાયમાં એક ક્રાંતિકારી પગલું ઊપાડી જેમણે ગુરૂવચને

પહેલ કરી અને એ અર્થે અનેક અપમાનો સહ્યા-ગાળો ખાધી ને અંતે સંસ્થાએ જેમને ભગતજીની જેમ 'વિમુખ' પણ કર્યા એ ***'દાદુકાકાની'*** તરીકે ઓળખાતી બ્હેનોની આ સેવા માટે પ.પૂ. કાકાશ્રીએ મને નિમિત્ત રૂપે વાપર્યો તેમજ બ્રહ્મસ્વરૂપ પ.પૂ. પપ્પાજીની મૂર્તિ પધરાવવાનો બુદ્ધિયોગ ને હામે ય આપી એ બદલ એઓશ્રીના જ ચરણોમાં કોટી-કોટી પ્રણામ!

અહોહો! કાકાશ્રીને મારે વિષે કેવું ને કેટલું હેત કે આટલો મારો પક્ષ! અને... આ વાત વિચારતા મને પપ્પાજી સહજ જ સાંભરે... વિદ્યાનગર-રામકૃષ્ણ મિશનના હૉલમાં પોષીપૂનમની આપણી શિબિરો થતી ત્યારે એક વાર ત્યાં ભરતજી અને હરણીના બચ્ચાનું ચિત્ર બતાવતા પપ્પાજી મને કહે – આ કાકા અને મુકુંદ! આજે એ વાતનું તથ્ય-મર્મ સમઝતા મારૂં હૈયું સહજ જ રડી ઊઠે કે ખરેખર કેવી અપ્રતીમ પ્રીતિ આ ગુણાતીત પુરૂષોએ આપણી સાથે કરી? એમણે પાત્રતા ય જોયા-કર્યા વગર આશીર્વાદ વરસાવ્યા જ કર્યા ને સાથોસાથ ઘડતરે ય કરતા રહયા. એક વાર મેં મારી ઉણપો છતી કરતાં કાકાશ્રી પાસે કંઈ વાત કરી ત્યારે એ વાતો ને ય પૂરી સાંભળ્યા કર્યા વગર એઓ વચ્ચે જ બોલ્યા :

'તારી બધી જ-સંપૂર્ણ જવાબદારી મારી છે ને તારી પાસે તો મોટાં-મોટાં સત્કર્મો કરાવવાના છે. એના વ્હેણમાં આ બધું કયાંય ધોવાઈ જશે એની ખબરે ય નહીં પડે.'

આજે એ જ પ્રકારે પ.પૂ. સ્વામિજી અને પ.પૂ. સાહેબ પણ મારૂં સાચવી રહ્યા છે. બાકી આજે તો શરદ્પૂર્ણિમા! મૂળ અક્ષરમૂર્તિ ગુણાતીતાનંદસ્વામિજીનો પ્રાગટ્ય પર્વ અને સાથોસાથ પ.પૂ. સ્વામિજીનો ભાગવતી દીક્ષા દિન; તે ત્યાં હરિધામમાં હજારો મુકતોને તેમની સ્થૂળ અનુપસ્થિતિ સાલવાની જ.

પણ, પ.પૂ. સ્વામિજીએ આ અવસરે પધારી નૈમિષારણ્યનું ઉદ્‌ઘાટન કર્યું અને મૂર્તિઓની આરતી કરી, એમણે મને જે ધરપત કરી છે એનો તો તમો કોઈને અંદાજે ય નહી આવે. પ.પૂ. સાહેબ–કે જેમનો હાથ બાપાએ પ.પૂ. કાકાશ્રીને સોંપેલો એ ય આજે ત્યાં બ્રહ્મજ્યોતિ પર 'ગુરુસભાની સુવર્ણ જયંતી'ના આયોજનની સભા ને કારણે અહીં ભલે ન આવી શકયા, પણ પ.પૂ. કાકાશ્રીના સંબંધે ખાસ આશીર્વાદ પાઠવવાનું ચૂકયા નહીં. કાકાજી સ્વરૂપ પ.પૂ. દિનકરભાઈ તો દૂરથી એકદમ ન આવી શકે, પણ એમણે ય આશીર્વાદ પત્ર લખ્યો જ. વિદ્યાનગરથી પ.પૂ. પપ્પાજી સ્વરૂપ બ્રહ્મસ્વરૂપીણી પ.પૂ. જયોતિબ્હેન-પ.પૂ. દેવીબ્હેન, હરિધામના ભકિતઆશ્રમથી પ.પૂ. સર્વેશ્વરબ્હેન-પ.પૂ. સુમનબ્હેન તેમજ મુંબઈથી પ.પૂ. ભરતભાઈ-પ.પૂ. વશીભાઈ અને મુકતો તેમજ પૂ. યોગીનીબ્હેન પણ આ અવસરની ખબર પડતાં ઉમંગે દોડી આવ્યા. આત્મીયતાનું-આત્મબુદ્ધિ ને પ્રીતિનું-કુટુંબભાવનું આ એક દર્શન જ છે ને એને જ તો ગુણાતીતાનંદસ્વામીએ ***'સત્સંગ'*** કહ્યો. તો, એમની આ જીવનશૈલીને આપણામાં ઊતારવાની અભીપ્સા કરીએ-પ્રાર્થના કરતા રહીએ.

ખરેખર! કાકાશ્રી અને પપ્પાજી કેવી સમર્થ અને ભવ્ય વિભૂતિઓ કે જેમણે પ્રકૃતિના રૂપાંતરનું આ ભગીરથ કાર્ય કરી આજીવન બ્રહ્મચર્યવ્રત ધારી ભગવાન ભજવાની પ્હેલ કરનાર **'જીવુબા-લાડુબા'**ની ઝાંખી કરાવતા ને મહારાજે સ્વયં જેઓ માટે વચનામૃત છેલ્લાના ૨૬માં ***'ભગવાનની***

પેઠે સેવા કરવા યોગ્ય સાધુ ગુણે યુક્ત બાઈઓ' કહી નવાજ્યા એવા એકાંતિક સ્ત્રીરત્નો પકવ્યા !

આમ, બ્હેનો ય **ભગવાન ભજી** આવી એકાંતિકી સ્થિતિને પ્રાપ્ત કરી શકતા હોય, તો જ મહારાજે આ વચનો ઊચ્ચાર્યા હશે ને ?

અને... પ.પૂ. કાકાશ્રી ઘણી વાર કહેતાં પણ કે આ હરિપ્રસાદસ્વામી ય બાપાની આ મરજી જાણી બ્હેનોના અમારાં કામમાં ખૂબ ભળ્યા !

આજે એવા પ.પૂ. સ્વામિજીનો ભાગવતી દીક્ષા દિવસ ! સ્વામિજીનો ચૈતન્યલક્ષી ક્રિયાકલાપ - એમની શૂરવીરતા - એમનું નિર્માનીપણું - એમનો નિરપેક્ષ પ્રેમ - એમનો બૃહદ્ વૈરાગ્ય - એમનું સૂક્ષ્મ તપ - એમની દિવ્યતા - એમની આત્મીયતા - એમનું ઔદાર્ય - એમની વિશાળતા - એમનું વાત્સલ્ય - એમની પ્રભુતા ને એમની સાધુતા જેવા એમના અનંત કલ્યાણકારી ગુણોનો પરિચય આપતા પ્રસંગોથી મારા કરતાં તો અંતેવાસી - નિકટવર્તી સેવકો ને મુક્તો વધુ જાણકાર હશે. છતાં ય હું માનું છું કે એથી ય આવા પુરૂષોની સમ્યક્ ઓળખાણ પડવી અઘરી જ છે. પણ,

'મહારાજે જેમ ગુણાતીતાનંદસ્વામીને દીક્ષા આપેલી એવી આજે પ્રભુદાસને અપાય છે'

એમ એમને દીક્ષા આપતી વેળાએ કહી બાપાએ આપણને એમની ઓળખાણ આપી જ છે. અને... **સહુ પ્રથમ પ.પૂ. કાકાશ્રીએ એ વેળાની આ વાતને પકડી સ્વામિજીના આ મહિમાનો ગોકીરો કરી એમની સાથે હેતવાળા ને એમના વિશ્વાસી એવા આપણા સહુના ભેજામાં એ બેસાડ્યો છે.** એમ આ તો **'આપ્તવાક્ય પ્રમાણ'** કહેવાય. એથી વિશેષ કોઈ પ્રમાણની આપણે જરૂર રહેતી નથી.

છતાં ય, પ્રસંગે આપણું મન આપણને ડગમગાટ કરાવી જ જાય છે. પણ, અહીં વચનામૃત મધ્ય ૩૫માં કહેલા મહારાજના શબ્દો યાદ રાખીએ –

'...તમારે સર્વેને મારે વિષે વિશ્વાસ છે ને હું તમને જેવી તેવી અવળી વાતે ચડાવી દઉં તો જેમ સર્વેને કૂવામાં નાખીને ઉપરથી પાણાની શિલા ઢાંકે ત્યારે તેને નીકળવાની આશા જ નહિ, તેમ તમે પણ મારા વચનને વિશ્વાસે કરીને અવળે માર્ગે ચઢી જાઓ તો એમાં મારૂં શું સારું થાય ?'

એમ, પ.પૂ. સ્વામિજીનો મહિમા છતો કરતાં બાપાના એ ઉદ્ગારો બનાવટી કે આટાટોપના તો નહીં જ હોય ને ?

વળી, ૧૩મા પ્રકરણની ૩૫મી સ્વામીની વાતમાં છે –

'જે સંત પોતાના હૃદયમાં મહારાજને અખંડ ધારી રહ્યા છે, તે (ગુણાતીત) સંત જ્ઞાની, ધ્યાની, પ્રેમી, (તપસ્વી) કરતાં મોટા છે.'

છતાં, આપણને ગુણોનો પ્રભાવ પડી જાય છે ? ને તેથી જ તો ફલાણા શું કથા કરે છે ? અરે ! એ બોલે તો સહુને Spell bound કરી નાખે. કે – શું એની પ્રેમલક્ષણા ભક્તિ છે ? શું એના નિયમ-ધરમ ? એવું કંઈ કેટલું ય આપણા મનને સ્પર્શી જાય છે.

એથી ય વિશેષ તો એમના દ્વારા - એમના કથનો દ્વારા સ્વામિજી જેવી વિભૂતિને પ્રમાણિત ઠેરવવાનો આપણો બાલીશ પ્રયાસ જ્યારે દેખાય ત્યારે પ.પૂ. કાકાશ્રી જે વાત કરતાં કે ***સિંહ શિયાળવાનો હાથ પકડીને એને કહે કે મારી રક્ષા કરજે*** - એના જેવું હાસ્યાસ્પદ લાગે.

વળી, સ્વામીની આ વાત એક તથ્ય એ પણ સ્પષ્ટ કરે છે કે- ગમે એવા જ્ઞાની હોય-ધ્યાની હોય-તપસ્વી હોય-પ્રેમી હોય, પણ એ ભગવાનના અખંડ ધારક ન પણ હોઈ શકે. બ્રહ્મરૂપ થયો હોય-ગુણાતીતભાવને પામ્યો હોય એ જ ભગવાનનો-પરબ્રહ્મનો અખંડ ધારક હોય. એ **ગુણાતીતભાવનો પ્રદેશ જ નોખો છે** અને **ગુણાતીત પુરૂષના પ્રસંગ સિવાય ગુણાતીતભાવને પામી શકાય જ નહીં.**

એ જ આપણે ત્યાં 'મૂળ અક્ષરમૂર્તિ ગુણાતીતાનંદસ્વામી'ની ઓળખની અનિવાર્યતા છે કે એમના વેલામાંથી આવેલી વિભૂતિના પ્રસંગે જ જીવ બ્રહ્મરૂપ થઈ શકશે-અન્યથા નહીં જ થવાય. બીજા પ્રભાવે કરીને સિદ્ધદશાના કે એવા બીજા કોઈ ભામે ચઢી જવાશે—જે ચક્કરમાંથી નીકળવું ય અઘરૂં નહીં, અશક્ય બની જશે.

રખે ભૂલીએ કે પ.પૂ. સ્વામિજી પ.પૂ. કાકાજી, પ.પૂ. પપ્પાજી, પ.પૂ. પ્રમુખસ્વામી મહારાજ, પ.પૂ. મહંતસ્વામિજી, પ.પૂ. અક્ષરવિહારીસ્વામિજી, પ.પૂ. સાહેબ અને પ.પૂ. દિનકરભાઈ એ ગુણાતીતના વેલામાંથી ઊતરી આવેલી પ્રગટ વિભૂતિઓ છે.

મને બરાબર યાદ છે ને સ્વામિજીને ય આ વાતની ખબર હશે. અમે મુંબઈ-અક્ષરભુવનમાં હતાં ત્યારે કેટલાક મોટેરાંઓએ 'ચિન્મયાનંદસ્વામીના ગીતા પ્રવચન'નો અમારો સંતોનો પ્રોગ્રામ ગોઠવ્યો'તો. એ પ્રોગ્રામ અમે attend કરી આવ્યા—કર્યા ને પ.પૂ. બાપા પાસે એ વાતની જયારે ખબર ગઈ, ત્યારે 'ત્યાં તો ડોશીઓ શ્લોકો ગાતી હોય ને આપણે સંતોથી ન બેસાય' કરી બાપાએ અમને બધાંને એક દિવસનો અપવાસ કરવાનું પ્રાયશ્ચિત્ આપેલું. આ અંગે બીજે દિવસે મારી સાથે કંઈ વાત કરતાં પપ્પાજી રમૂજમાં બોલ્યા—ખાધો ને લાડવો, ચિન્મયાનંદજીના પ્રવચનનો ? મેં કહ્યું – ત્યાં ડોશીઓ હતી એટલે બાપાએ બધાંને અપવાસ આપ્યો. પપ્પા તરત બોલેલા—એ ડોશીઓનો નથી; એ ડોશીઓ તરફ તો તમારી કોઈની નજરે ય નહીં ગઈ હોય, પણ **વચનામૃત ને સ્વામીની વાત સિવાય બીજે કેમ માલ મનાયો ?** એનો બાપાએ ઠપકાર્યો ! બાપાની મરજીના આવા કંઈ રહસ્યો-કંઈ મર્મો-કાકા કહેતા એમ-એમના જંબુરિયા બનેલા કાકાજી, પપ્પાજી, સ્વામિજી જેવાના જોગે સમઝાયા છે અને બાપાએ આપણને એમનો જ જોગ પણ આપ્યો છે.

અરે ! પ.પૂ. કાકાશ્રીનું નામ ભૂંસાડયા વગર અક્ષરપુરૂષોત્તમ સંસ્થાનો પણ ઈતિહાસ કોઈ કહે કે લખે તો ખ્યાલ પડશે કે જે પ્રકારે ઘરેડનો ચીલાચાલુ સત્સંગ ત્યારે ચાલ્યા કરતો'તો એને કાકાશ્રીએ જ એક નવી દિશા આપેલી. બાપાને એક નવો ઉઠાવ લેવો જ હતો અને એ માટે પ.પૂ. કાકાશ્રી જેવી શૂરવીર વિભૂતિને પસંદ કરી, એમને સાક્ષાત્કાર કરાવી તત્ત્વથી પોતાની સમ્યક્ ઓળખાણ કરાવી. ત્યારથી કાકાશ્રીએ એક ઝૂંબેશ જ ઊપાડી કે ***'યોગી મહારાજ એક સામાન્ય સાધુ નથી, પણ મહારાજનું ભવ્ય સ્વરૂપ છે. શાસ્ત્રીજી મહારાજ ગયા જ નથી, યોગીજી મહારાજ દ્વારા પ્રગટ જ છે.'*** કાકાશ્રીના આ ઉદ્દઘોષ પૂર્વે બાપાને સહુ **'બહુ સારા સાધુ'** – એટલું જ માનતા ને બાપા પણ સહુ પાસે દાસભાવે જ વર્તતા. અરે ! બધાંની જ આજ્ઞામાં રહેતા-બધાંની સેવા કર્યા કરતા. એ તો—કાકાએ તત્કાલીન સમાજને એક સૂઝ આપી— દ્દષ્ટિ આપી કે ***એમને આપણા ગમતામાં નથી રાખવાના, પણ આપણે સહુએ યોગીજી મહારાજની આજ્ઞામાં રહેવાનું છે.***

બાકી, ૧૯૫૪-૫૫-૫૬ના વર્ષોમાં તો મેં જોયું છે-સ્વામીજીએ પણ જોયું હશે કે કપોળવાડીમાં બાપા, મોટાસ્વામી, સંતસ્વામી, પ્રમુખસ્વામી મહારાજ, વકીલસ્વામી એક જ ગાદલા પર ભેગા જ બેસતા. સંતો મુંબઈ આવતા, ત્યારે બાપા ય બધાંની ભેળા પોતાના પોટલા ઊપાડતા. આજે તો નાના-નાના સંતોને ય હરિભક્તો કંઈ ઊપાડવા-કરવા દેતા નથી. પ.પૂ. કાકાશ્રીએ જ બાપાનું આસન નોખું કરાવેલ. સહુ પ્રથમ બાપાની જયંતી પણ મોટે પાયે પ.પૂ. કાકાશ્રીએ સારંગપુરમાં ઊજવાવડાવેલી. આમ **પ્રગટ સ્વરૂપો ને મુક્તોના ય મહિમાનો સાક્ષાત્કાર આજે જે દેખાય છે તે પ.પૂ. કાકાશ્રીની દેન છે.** તે વખતનું વાતાવરણ જોઈ આફ્રીકાથી સારંગપુર સમૈયામાં આવેલા મોમ્બાસાવાળા **પ.ભ. રવિભાઈ પંડયા** જેવા સુધ્ધાં બોલી ઉઠેલા –

'મને તો એવો અનુભવ થાય છે કે આ બધા મહાત્મ્યના મૂળમાં દાદુભાઈ છે.'

૫૭-૫૮થી તે ઠેઠ ૧૯૬૬ના મે સુધી તો વિચરણમાં-સમૈયાઓમાં બાપા પ.પૂ. કાકાશ્રીને લગાતાર ભેગા જ રાખતા. કેટલીક વાર તો કાકા માનો સવારની ગાડીમાં મુંબઈ પાછા ફર્યા હોય ને તે જ દિવસે દશ-સાડા દશ વાગે બાપાની ટપાલ આવી જતી કે *'દાદુભાઈ! તમારા દર્શનની તાણ છે'* ને... બાપા પાસે પ્હોંચવા તે રાતના જ ગુજરાત મેલમાં કે સૌરાષ્ટ્ર મેલમાં કાકા પાછા નીકળી જતા!

આમ એ ગાળામાં તો ગુણબુદ્ધિનો વ્યવહાર પ્રધાન-સંસારપ્રધાન સત્સંગ ચાલ્યા કરતો. કાકાશ્રીએ સત્સંગમાં પ્રવેશ કર્યો ને સામૂહિક રૂપે આત્મબુદ્ધિ ને પ્રીતિએ યુક્ત સંતપ્રધાન સત્સંગ કરવાની દીશ સમાજને મળી. પૂ. કાંતિકાકાના કુટુંબ સાથે એવી આત્મબુદ્ધિ ને પ્રીતિથી એમણે વ્યવહારની શરૂઆત કરી, જ્યાંથી પ્રેરણાને પામી એક યોગી પરિવાર પાંગર્યો જે આજે 'ગુણાતીત સમાજ' રૂપે ફૂલ્યો ફાલ્યો છે.

બ્હેનો ભગવાન ભજી શકે એની મોકળાશ કરી આપવા માટે કાકાશ્રીના માથે જે માછલાં ધોવાયાં છે, એના સાક્ષી તો હજુ આપણે બેઠા છીએ. તે **પ.પૂ. સ્વામિજી** ય બોલેલા કે –

'પહેલાં તો કાકા જ બ્હેનોને બહુ વાતો કરતાં.'

એમ કાકાજીએ આપણને સહુને નવી-નવી ક્ષિતિજો ખોલી આપી, એ તરફ આંગળી પકડી ચાલતા શીખવ્યું ને આપણે પોતા મેળે ચાલતા થયાં ત્યાં ય આગળ-આગળ આપણી ઢાલ બનીને રહ્યા ને છેવટે સ્વતંત્ર ને સ્વાધીન પણ કર્યાં. એનો આપણે હવે આનંદ માણી રહ્યા છીએ – સુખ ભોગવી રહ્યા છીએ. એમની એ ગાથાનું આજે એક નવું પાનું ઊઘડે છે – **'અક્ષરજ્યોતિના ભવનનું ઉદ્‌ઘાટન'!**

'અક્ષરજ્યોતિ' એટલે જ અમારી 'આનંદી'! વર્ષો પ્હેલાં કોઈ એક પ્રસંગે આનંદીને મેં ગુલાબના ફુલવાળા pictureનું નાનું સોવિનિયર મોકલેલું. એના પર writing છે – *'A single rose can be my garden'*. કહી શકાય કે આનંદી દીદી દ્વારા એ ભાવનાએ સાકાર રૂપ લીધું જ છે ને આજે અહીં તેર બ્હેનો ભગવાન ભજતી થઈ ગઈ!

આનંદીનો ઈતિહાસ પણ એક શૌર્યભર્યા સાહસની કથા છે. જો કે સ્વયં તો પ્રેમનું-આત્મીયતાનું જાણે એક nightingale જ છે. એ વાતનો તો તમો સહુને પરિચય પણ છે. જ્યારે ય તમોને કોઈને

મળતી હશે - કાયમ હસતી! હું એ અંગે વધું કંઈ પણ કહું એ અયોગ્ય જ ગણાય; કારણ, ગુજરાતીમાં કહીએ છીએ ને કે વરને કોણ વખાણે? વરની મા! – એવું લેખાશે. એટલે એ અંગે વધુ પિષ્ટ-પેષણ જ કરતો નથી. આમે ય સહુ જાણે છે- આનંદી એટલે? ગુરૂજીનું પેંદુ! હું ય તે કહું છું–'દીદી એટલે? મારૂં ટૅપ રૅકોર્ડીંગ!' પણ, રખે ભૂલતા– મારી જેમ જ દીદી સ્વતંત્ર મિજાજની ય છે.

આનંદીએ ભગવાન જ ભજવાનો નિર્ણય લીધો ને એને ઘરે એનો વિરોધ હતો એટલે, દિલ્હીમાં એને ક્યાં રાખવી એ એક પ્રશ્ન હતો. પણ, ત્યારે પ.પૂ. કાકાશ્રી સ્થૂલરૂપે વિધમાન હતાં; તેઓશ્રીની આજ્ઞાએ કરી મુંબઈ ગૌરાંગને ત્યાં- વનલતાને ત્યાં, પછી પંઢરપુર રાધા અક્કા પાસે ને ત્યાંથી સાહિબાબાદ આર.કે.અગ્રવાલને ત્યાં આવી રહી. છેવટે પંજાબ- સવદ્દીકલામાં પ.ભ. ધરમપાલને ત્યાં છ મહિના ગુપ્તવાસે રહી દિલ્હી પાછી આવી અમારા પ.ભ. વિજયબાબુની બ્હેન બની એમને ત્યાં રહી ભગવાન ભજવાનો આરંભ કર્યો. ખરેખર! ધન્યવાદ છે વિજયબાબુને કે એ કટોકટીના સમયે સમાજના ડરની સ્હેજે પરવાહ કર્યા વગર એક પારકી જુવાન છોકરીને એમણે પોતાને ત્યાં રાખી! પછી તો સ્મિતા- ગૌરી- સ્વાતી- નિષ્ઠા જેવા આ માર્ગે ચાલવા તૈયાર થયા ને એ નાના મંડળે A-103ના મંદિરની સામે 1-B જનતા ફ્લૅટ્સમાં રહી આરાધના ચાલુ રાખી. પણ, ત્યાં તો પ.પૂ. કાકાશ્રીએ લીલા સંકેલી!

અને...'આ બ્હેનોની જવાબદારીનું મારૂં ગજું નહીં જાણી'– એઓને જ્યોતમાં કે હરિધામની બ્હેનો સાથે ભેળવવા હું પેરવી કરતો રહ્યો. પરંતુ એવો કંઈ મેળ બેઠો નહીં. એ અરસામાં આ અંગે એક વાર પ.પૂ. સાહેબ સાથે વાતચીત કરતા એઓ એકદમ બોલ્યા કે –

'આ છોકરીઓ કાકામાં જોડાએલી - એમને ભરોસે નીકળેલી, એટલે એ જવાબદારી તમારે જ લેવી પડે. એમાં ઍસ્કેપીઝ્મ નહીં કરતા.'

સાહેબમાંથી જાણે કાકાજી જ મને ઠપકારી રહ્યા હોય એવું મને લાગ્યું... દીદી પણ અહીં બ્હેનો-ભાભીઓમાં ઓતપ્રોત થતી ગઈ ને... મહિલા વિભાગની પ્રવૃત્તિ પણ એમણે સંભાળી લીધી. બ્હેનોની સંખ્યા ને પ્રવૃત્તિ વધતી ગઈ, એટલે એઓ 'શક્તિ ઍપાર્ટમેન્ટ્સ'માં shift થયા.

અક્ષરનિવાસી **શ્રી એચ.કે.એલ ભગત સાહેબ**ને પ.પૂ. કાકાશ્રી સાથે ખૂબ પ્રીતિ હતી જ; એટલે આ બ્હેનો માટેની વ્યવસ્થામાં પોતાનું યોગદાન આપવાની જ એક ભાવનાથી આઉટ ઑફ ધી વે જઈને D.D.A. પાસે અહીં મંદિરની નજદીક જ બ્હેનો માટે ૧૯૮૯માં એમણે જમીન ફાળવી. ઠેઠ ૧૯૯૭માં બ્રહ્મસ્વરૂપ પ.પૂ. પપ્પાજીએ ત્યાં ભૂમીપૂજન કરેલું ને આજે દશ વર્ષે બ્હેનોનું આ ભવન તૈયાર થયું. આ નિર્માણ માટે દશ વર્ષનો ગાળો આમ તો ઘણો મોટો ગણાય. પણ, આ દરમ્યાન કંઈ એવા પ્રસંગો ઘટ્યા – જેવા કે પૂ. દીદીનું હાર્ટનું ઑપરેશન, મારી બાઈપાસ સર્જરી, પરછાઈની કીડની ટ્રાન્સ્પ્લાન્ટ – જેણે કરીને બાંધકામ ખેંચાતું ગયું.

ખરેખર, ધન્યવાદ છે અત્રેના મુક્તોને કે આ દરેક પ્રસંગે તો તેઓ ઊભા રહ્યા જ, પણ પોતાનું-પોતાની સગી બ્હેનોનું એક કામ ખોરંભે પડયું હોય એમ અક્ષરજ્યોતિની ચિંતા કરતા ય રહ્યા. પંજાબ-જગરાંવના અમારા **મહેન્દ્ર જ્યસ્વાલ** અહીં આવ્યા પણ છે. ૨૦૦૧ની સાલમાં એણે મકાન

કરવા પ્લૉટ લીધો. પણ, ત્યાં કોઈ કામ શરૂ ન કર્યું. હું જ્યારે ય પૂછું કે ક્યારે મુહૂર્ત કરે છે? તો એનો એક જ જવાબ હોય-**'અક્ષરજ્યોતિ હો જાને દો, ફિર શુરુ કરેંગે'** અને એની મોકળાશે એ લગાતાર એનું contribution મોકલતા જ રહેતા. અમારી **નિશિના અનિલજી**એ અક્ષરજ્યોતિની સેવા માટે જ આર્કીટૅકટનો course કર્યો ને D.D.A.ની job લટકતી જ રાખી અક્ષરજ્યોતિના બાંધકામની જવાબદારી સંભાળી લીધી ને મને નિશ્ચિંત કરી દીધો. આવા તો કંઈ કેટલાય નામ ગણાવાય.

અરે! જેઓ પોતે આર્થિક રીતે આમાં ડાઈરેક્ટ કંઈ contribute નથી કરી શક્યા એ **નાના બાળકો - યુવકો - દિકરીઓ - ભાભીઓ** સર્વે રદ્દીના અમારાં અભિયાનમાં જોડાઈ ગયા. સારાં ઘરનાં બૈરાં ય આ રીતે માગવા નીકળી પડે છે – એ જોઈ આપનારા પણ દંગ થઈ હોંશે-હોંશે આપતા ગયા.

અમારા **પુરી સાહેબ** છે. હમણાં હમણાં જ બેંકમાંથી રીટાયર્ડ થયા છે. આપણી સાથે એમને ખૂબ એટલે ખૂબ હેત છે. એમની સિન્સિયારીટી આવડત વગેરેને લઈને બેંકે એમને ૨૫-૩૦ હજાર સેલરીની ઍડવાઈઝરી જૉબ માટે ફરી ઑફર નહીં, પણ આગ્રહ ય કર્યો; પણ એમણે જોયું છે કે ગુરુજીને ભણેલા-ગણેલા એક helping અને responsible handની ખૂબ જરૂર છે-તેથી કંઈ પણ વિચાર્યા કર્યા વગર એ offer ઠેલી જ દીધી! **આ છે પ.પૂ. કાકાશ્રીએ અહીં ઊગાડેલો કુટુંબભાવ!**

સ્વામી, અમે આ અર્થે કે એવા કોઈ પ્રસંગોએ ય આજ સુધી રસીદો ફાડી ઊઘરાણું કર્યું નથી. આજે પણ અહીં જે જે આવ્યા છે એમાં બે-પાંચ જ નવા હશે; બાકીના સર્વે તો એકબીજાથી ખૂબ જ પરિચિત, તેથી જાણે કુટુંબીઓનો એક મેળાવડો જ થયો છે. પ્હેલાં મારો વિચાર તો સો એક જેટલાં અમે ભેગાં થઈ આપની પાસે આરતી કરાવી લેવાનો હતો. પણ, આ આનંદીને જેને કહીએ ને – 'એને બધાનું બહુ' – એણે આ હાઉસો-ઝાઉસો ઊભો કર્યો.

છેલ્લે-છેલ્લે અમારો **આશિષ** પણ એના **'નક્ષુ'**ને મૂકીને રાત દિવસ જોયા વગર આમાં કૂદી જ પડયો ને **પૂ. દીક્ષા, પૂ. પરછાંઈ, પૂ. બંસરી** તેમજ **પૂ. નિત્યા**એ યુદ્ધસ્તરે કામ ઊપડાવ્યું, તો અંતે અમારો આ સંઘ 'યેન કેન પ્રકારેણ' કાશીએ પહોંચ્યો ખરો. **એક કામ પૂરૂં થાય છે એનો માત્ર આજે આનંદ નથી, પણ જે કુટુંબભાવે બધાંએ-બાપા કહેતાં એમ હોલા ઉપાડ કરી આ ઉકેલ્યું છે, એનો હર્ષ છે.**

એક રમૂજની સરસ વાત કરૂ. ફંડના અભાવે અહીં અચાનક કંઈ કામ રોકાયેલું. ખબર નહીં કેમ? પણ મને ત્યારે મનમાં એવું થઈ ગયું કે આ સ્વામી, સાહેબ, જ્યોતિબ્હેન બધાં ફોરેન જઈ આવે છે – એમ મારે ય હવે એક ચક્કર મારી ડૉલર્સ-પાઉન્ડ્સ ઊઝેડી લાવવા જોઈએ; એટલે આવે પાર આનો. અને તમે માનશો નહીં સ્વામી – તે જ દિવસે ભરતભાઈનો અચાનક સામેથી ફોન આવ્યો કે અહીં **'પૂ. શાંતાબા'** આવ્યા છે ને અક્ષરજ્યોતિ માટે આનંદીને સારી એવી સેવા આપી રહ્યા છે. હું તો આ 'શાંતાબા' કોણ – એ કંઈ જાણું ય નહીં, પણ એઓ પણ આજે આ અવસરે અહીં આવી જ ગયા-જેમના દ્વારા મહારાજે અમને પાઉન્ડસ પણ મોકલી તો આપ્યા'તા!

પણ, બ્હેનો હવે ખૂબ સાવધાન રહે. તમે હવે જાહેરમાં આવ્યા. એટલે તમારી જવાબદારી ખૂબ વધી જાય છે. ભૂલતા નહીં કે **'ભગવાન ભજવા'** જ આપણે આ રસ્તે ચાલ્યા છીએ. એ સિવાય કોઈ ઉધમ-પ્રવૃત્તિ કરવી જ નથી. બીજું બધું ટાટા-બીરલા-ધીરૂભાઈ અંબાણી-મિત્તલ-બીલ ગેટ્સ જેવાઓ દ્વારા મહારાજ કરાવતા રહેશે. આ મારૂં માનવું છે. એ ક્ષેત્ર- એ sphere આપણું છે જ નહીં. **'ભગવાન સાધવા ને ભગવાન આપવા'** – એ સિવાય કંઈ જ કરવું નહીં.ધ્યેયની આ સ્પષ્ટતા રાખશો તો સરળતા રહેશે.

પ.પૂ. કાકાશ્રી કહેતાં કે અક્ષરપુરૂષોત્તમના સિદ્ધાંતે ભગવાન ભજવાની શરૂઆત જ ધામ, ધામી ને મુક્તોના ભજનથી થાય છે. અર્થાત્ આપણે માટે આ સિવાય બીજું કંઈ પણ સત્ય છે જ નહીં. તો, પ્રત્યક્ષ ગુણાતીત સ્વરૂપ થકી મહારાજનું પ્રગટપણું ને સર્વોપરીપણું માની એના સંબંધવાળા સહુમાં સુહૃદ્‌ભાવ ને નિર્દોષબુદ્ધિના સિદ્ધાંતે કુટુંબીઓ જેવી આત્મબુદ્ધિ ને પ્રીતિ કરવી ને કરાવતા રહેવી. આ ભાવના જેટલી વ્યાપક બને, આવા મુક્તો જેટલાં તૈયાર થાય એટલો 'સત્સંગ' વધ્યો ગણવો. **આ એક જ ધંધો કરવો.**

યાદ હોય તો, કાકાશ્રી બોલતા –

'આટલા વરસથી બાપાની દુકાન ચલાવીએ છીએ.'

ભૂલીએ નહીં કે કાકાશ્રી ને પપ્પાજીને 'સત્સંગ'નું એક સ્પષ્ટ દર્શન હતું.

આવી વાત કરી એમને પોતાનો કોઈ ધજાગરો ન્હોતો કરવો કે બણગાં ન્હોતા ફૂંકવા. પણ, હવે સમઝાય છે કે એઓ આપણને કહેતાં કે તમે પણ અમારી જેમ **આ જ** ચલાવજો. **'આત્મબુદ્ધિ ને પ્રીતિનો - કુટુંબભાવનો સત્સંગ'** જ વધારજો. દેખાદેખી પણ બીજે ભામે નહીં ચઢી જતાં. સ્વામીની એક વાત છે –

'જો ગરાસિયો મોટેરો હોય તો પૃથ્વી ભેળી કરે, વાણિયો મોટેરો હોય તો દ્રવ્ય ભેળું કરે, બ્રાહ્મણ મોટેરો હોય તો પુસ્તક ભેળાં કરે ને રબારી મોટેરો હોય તો ઢોરાં ભેળાં કરે, પણ કોઈયે એકાંતિકનાં ટોળાં ભેગાં કર્યાં ? બીજામાં કાંઈ માલ નથી. તે સારૂં આવા સાધુનો સમાગમ કરી લેવો ને એકાંતિક સાધુ થાવું...'

સ્વામીએ આ પોતાની વાત કરી છે કે ભગવાનનું એ ભવ્ય સ્વરૂપ; તેથી એકાંતિકના ટોળાં ઊભા કરવાનો જ એમણે ઉધમ કર્યો છે. આપણે ય તે બોલીએ છીએ ને કે અમને ભગવાનનું ભવ્ય સ્વરૂપ મળ્યું! તો આ સિવાય બીજું કરી, શું કામ આપણા ગુરૂને લજવવા ? તો, **સ્ત્રીપુરૂષના ભાવથી પર, છતાં આપણી મર્યાદામાં** જ રહેતા થકાં એકાંતિક ભક્ત થઈ, એ માર્ગે જ સહુને લઈ જવાનો ઉધમ કરીએ.

કાકાશ્રી આ જ વાત જુદી ભાષામાં કહેતાં – ***'સ્પીરિચ્યુઅલ ટૅકનીશ્યન્સ' બની, એવા બીજાં તૈયાર કરો.***

તો, વાતની વાત આજે એટલી જ કરવાની છે કે આ ધ્યેય તરફ જ નજર રાખીએ ને **'શુદ્ધ સત્સંગ'** જ કરીએ. એ માર્ગે જ અગ્રસર રહીએ એવા સ્વામીજી-જ્યોતિબ્હેન આશીર્વાદ વરસાવે એ જ

પ્રાર્થના. અંતમાં –

સ્વામીજી, આપે આરતી કરી મૂર્તિઓમાં પ્રાણપૂર્યા-તો એવો એક સંકલ્પ કરી આશીર્વાદ આપી જજો કે આ બ્હેનો સહુ અહીં સર્વપ્રકારે નિરામય-કુશળ રહે ને અહીં આવનાર હર કોઈને શાંતિનો અનુભવ થાય-નામ પ્રમાણે હૉલમાં બેસી ભજન કરનારને 'નૈમિષારણ્ય' વર્તે... **અહીં બેસી રહેવાનું જ મન થાય ને ભજનના બળે એમના દરેક પ્રશ્નોનો ઉકેલ મળે...**

प.पू. भरतभाई –

... जब यहाँ आए और ये अक्षरज्योति मंदिर को देखा तो अंतर में एकदम बहुत ही आनंद से भर गए कि **गुरुजी ने ये मंदिर का कैसा निर्माण किया है? छोटी-छोटी बातों का कैसे ध्यान रखा है।** कल रात को दो बजे तक तो वे बता रहे थे कि क्या-क्या करना है, कैसे करना है... क्या व्यवस्था करनी है। **ये तो स्थूल मंदिर है और इसका ये पुरुष इतनी मावजत करते हैं, इतना अच्छे से अच्छा बनाने का सोचते हैं, तो इन्होंने हमारे चैतन्य के लिए तो कितना सोच कर रखा होगा कि इनको कैसा बनाएंगे?** वो हमें पता नहीं है, मगर वो जानते हैं कि उन्हें हमें क्या बनाना है...

गुरुजी को हमेशा एक बात पसंद है कि जो भी करना, वो अच्छे से अच्छा करना – सौ प्रतिशत करना... **गुरुजी का ये भाव है कि हमें किस तरह अच्छे से अच्छा वर्तना है।** हम अपना वर्तन किस तरह से अच्छा बनाएं, किस तरह हम ये गुणातीत समाज में जीवन जीएँ, **जिससे काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी, साहेब और सभी स्वरूपों को अंतर की हाश हो; ऐसी उनकी हमेशा हमारे लिए भी निगाह रही है...**

गुरुजी का एक दर्शन यह भी होता है कि उन **के दिल में जो होता है, वो हमें बता देते हैं।** उन्हें कोई व्यक्ति से कभी मन-मुटाव नहीं हुआ है। वे अगर कुछ कहते भी हैं, तो वे आपकी क्रिया के बारे कहते हैं; ऐसा नहीं है कि आप उन्हें पसंद नहीं हो...

तो, आज गुरुजी के चरणों में प्रार्थना करनी है। **गुणातीतानंदस्वामिजी** ने १२वें प्रकरण की बात में कहा है कि –

आज तक हम को दो बात का आग्रह था। एक आग्रह ये था कि अच्छे-अच्छे मंदिर बनें और दूसरा आग्रह ये था कि उसमें अच्छे मनुष्य बनें।

अब ये दोनों काम पूरे हो गए हैं। अभी एक ही बात का आग्रह है कि **सब को हमारे जैसे साधु बनाना है।** और **आज इसके लिए गुरुजी हम सभी के पीछे पड़े हैं। स्वामिजी, साहेब, काकाजी, पप्पाजी सबका यही आग्रह है** कि आप ऐसे बनो। इन्हें और कोई आग्रह नहीं है।

...ऐसा महल बनेगा, बहुत अच्छी सुविधा रहेगी और बहुत ही अच्छी तरह से सब रहेंगे; परंतु हम यदि प्रभु में नहीं जुड़े, तो वो सारी बात मारी जाएगी। सो, इन **सब का यही उद्देश्य है कि हम किस तरह प्रभु में जुड़ें!**

...उन्हें तो **हमें जीवकक्षा में से ब्रह्मकक्षा में – गुणातीत कक्षा में लेकर जाना है**, बहुत बड़ी बात है। यह बात हमारी दृष्टि में आनी मुश्किल है, पर ये स्वरूपों ने हमारे लिए बहुत इज़ी बना दिया है... ऐसा बनाने स्वामिजी के चरणों में हमारी प्रार्थना है और आज के दिन वे ऐसे आशीर्वाद देकर जाएं...

प. पू. यशोभाई –

'अक्षरज्योति प्रवेश!' **गुरुजी... जो भी सिलेक्ट करते हैं, वो भी इतने अद्भुत तरीके से करते हैं,** उसमें मीनमेख (फर्क) नहीं हो सकता है। गार्गी को दीक्षा देनी थी, तो ७–७–७। उस समय टाईम कम था; पू. दीदी को एकदम इन्टीमेशन दिया और इट वॉझ ए यूनिक डॅ, ०७-०७-०७। अभी मैं मल्कानी अंकल को बात कर रहा था कि 'टु एरेन्ज धीस फंक्शन, इट वॉझ वॅरी डिफिकल्ट!' एक महीने पहले यहाँ कोई साफ-सफाई नहीं थी। इन्टीरियर चल रहा था... तो ये दिन पकड़ना इम्पॉसीबल था...

गुरुजी बहुत क्रियेटीव हैं, बहुत इनोवेटिव हैं, वॅरी थॉटफुल हैं। आज और कल ये जो देखा, तो मुझे ऐसा लगा कि ये गुरुजी के प्रति की अद्भुत भक्ति व अद्भुत महिमा है। कोई भी चीज महिमा और भक्ति के सिवा नहीं हो सकती है। ये जो इम्पॉसीबल काम था, वो एक महीने में करके आज हम सबको इकट्ठा किया; वो ही एक जबरदस्त चमत्कार है। **आज स्वामिजी का दीक्षा दिन! आज लाखों हरिभक्त उधर हरिधाम में हैं... धीस विल ऑलसो कम इन हिस्ट्री कि स्वामिजी वो सब छोड़ कर आज हमारे साथ यहाँ हैं...**

भरतभाई ने बताया–भवन बनाना अच्छी बात है, एक्सलन्ट! एनी आर्कीटॅक्ट, वीथ मनी, कॅन मेक एक्सलन्ट थिंग्स। पर, इस बार ऐसा लगा कि जो अंदरुनी भक्ति पैदा करना–चालीस दिन से ये जो ५०-६० बच्चे अपने आपको घिस-घिस कर काम करते हैं, उनमें जो भक्ति डाली है, काकाजी की महिमा उनमें आई है, ये **बच्चों को ऐसी भावना होना कि बहनों की ये सेवा करेंगे, तो काकाजी, पप्पाजी, योगीजी महाराज राजी होंगे–यह इतिहास क्रियेट करा है गुरुजी ने!**

आज गुणातीतानंद्स्वामिजी का प्रागट्य दिन! करोड़ों धन्यवाद उनको कि महाराज की पहचान कराई और ऐसे ही करोड़ों धन्यवाद योगीजी महाराज को जिन्होंने काकाजी–पप्पाजी (जब उन्हें पूछने) गए कि ये ज्योति बहन-तारा बहन का क्या करना है? तब, **'बहनें भगवान भजें तो क्या गलत है? महाराज जोग दे देंगे'**–कह कर ये बहनों के लिए भगवान भजने का राजमार्ग खुलवा दिया।

हमारी बहुत बड़ी जवाबदारी है। आज हम इतनी जोर से बात कर सकते हैं, आप सब सेलिब्रेट कर सकते हैं, गुरुजी इतना ये कर सकते हैं। लेकिन, उसके पीछे **काकाजी, पप्पाजी, कांतिकाका, बा ने कितनी मुश्किलें, कितनी मुसीबतें झेली... तब आज ये बात शक्य हुई है।** 'ज्योत' हुई, ज्योत के बाद 'भक्ति आश्रम' बना। तब काकाजी बोलते थे कि स्वामिजी तो बहनों से बात भी नहीं कर सकते हैं, फिर भी उनकी ऐसी घड़ाई करनी, उनको ब्रह्मभाव में लेकर जाना... यूं इतना बड़ा संकल्प करना! वो बहुत बड़ी बात है। अब ये 'अक्षरज्योति' बनी। मुझे लगता है कि ये जो **अक्षरज्योति भवन** का उद्घाटन हुआ है, वो खाली **'दिल्ली वाली बहनों का प्रवेश'–ऐसा नहीं है। पर, एक जबरदस्त घटना घट रही है।** यहाँ अभी ये पंद्रह-सत्रह बहनें हैं, बट इन फ्यूचर, मे बी नॉट इन हन्ड्रेड्स, बट इन थाऊझन्ड्स बहनें यहाँ से भगवान भजेंगी और भगवान का काम करेंगी। इसीलिए– **भक्ति के लिए–स्वामिजी सब छोड़ कर यहाँ आए हैं... भगवान भक्ति के आगे हार जाते हैं।**

'महिमा' और **'भक्ति'** ये दो शब्द समझने भी बहुत मुश्किल हैं... **रद्दी लेकर ये सारा भवन बना है।** तो रद्दी दान देने वाले भी पूछते थे कि इतना बड़ा 'अक्षरधाम' मंदिर बन गया, तुम्हारा कब होने वाला है?

तुम्हारा मंदिर होता ही नहीं है। लेकिन, **गुरुजी यहाँ दो कार्य साथ में कर रहे थे; एक ये मंदिर तैयार करना और दूसरा ये जो बहनें यहाँ रहने वाली हैं, वो भी 'गुणातीतभाव' में ऐसी रहती हो जाएं** कि वो ये मंदिर संभाल कर कार्य को बढ़ा सकें... काकाजी की महिमा हो, तो ये काम हो सकता है। तो ये काकाजी, पप्पाजी और हरिप्रसादस्वामी के रूप में योगीजी महाराज खूब खुश होते होंगे। **धॅट इज़ ए ट्रीमेन्डस डॅवलप्मेन्ट ऑफ सत्संग।** नंबर्स से सत्संग बहुत बढ़ रहा है। पर, इसी तरह से भक्ति का – आत्मीयता का सत्संग बढ़ना – विकास होना, इससे भगवान बहुत खुश होते होंगे। इसी भक्ति को मद्देनज़र रखते हुए स्वामिजी वहाँ का इतना बड़ा फंक्शन छोड़ कर अक्षरज्योति के उद्घाटन पर आए। मुझे तो लगता है कि **ये उद्घाटन – इट विल गो वॅरी ईपोक।** जैसे **प.पू. गुरुजी ने ये पप्पाजी की मूर्ति प्रतिष्ठा करवाई। इस साल में बहुत ईपोक मेकींग फंक्शन्स हुए।**

तो मूर्ति प्रतिष्ठा हो गई, ये भवन भी अच्छा हो गया। बट **इच सक्सॅस इज़ ए रीस्पॉन्सीबीलिटी, जैसे इच फॅइल्यूअर इज़ ए लर्निंग।** और... आज साक्षात् गुणातीतानंदस्वामिजी का प्राकट्य दिन है। **गुणातीतानंदस्वामी मीन्स प्यॉर स्पीरीच्युआलीटी।** उन्होंने उसके सिवा सत्संग में और कुछ रखा ही नहीं। इनकी सिम्पलीसिटी देखो – पत्तर और बाजरे का रोटला व छाछ! तिलक भी लकड़े का! 'अक्षरब्रह्म' – अनंत कोटि ब्रह्मांड जिसके रोम में उड़ते हैं, ऐसे वो – मानवस्वरूप में! **एकदम सहज और सिम्पल! वो वारसा योगीजी महाराज ने और काकाजी-पप्पाजी ने हमारे साथ ऐसा रखा है।**

मैं ये इसलिए बोलता हूँ कि **बड़े भवन होंगे**, सब अच्छा-अच्छा होगा; **लेकिन, हमारी स्पीरीच्युआलीटी, हमारी सरलता, साधुता, सादगी, सिम्पलीसिटी – धॅट इझ पावर!**

...तो स्वामिजी को आज प्रार्थना है कि हमारी कोई ऐसी हैसियत नहीं है, औकात नहीं है। गुरुजी, स्वामिजी – आज गुणातीतानंदस्वामिजी के प्रागट्य दिन पर भरतभाई ने जो माँगा कि गुणातीतभाव में हम रहते हो जाएं – वह करवा दो। उससे बढ़िया गिफ्ट हम भगवान को दे नहीं सकते। जैसे कि **गुरुजी को ये लाईन बहुत पसंद है** कि –

'हमें देख कर हर कोई सोचे कैसे होंगे काकाजी!' हम उनका परिचय बन जाएं, उनकी पहचान बनें।

बहुत मुश्किल है, स्वामिजी यह – हमारे बल से होने वाली बात भी नहीं है। तो आज बहुत बड़ा दिन है, आप बहुत-बहुत बड़े हैं... भगवान रखे हुए हैं... तो, यह करवा दो।

गुरुजी भी इतना करते हैं... हर एक का इन्डीवीडयुअल ख्याल रखते हैं....

आज सुबह अक्षरज्योति के प्रवेश में ज्योति बहन वगैरह सब गरबा ले रहे थे, तो एकदम आँख में आँसू आ गए कि कहाँ वो A-103 और कहाँ ये अक्षरज्योति की मंजिल? कहाँ वो 1-B का जनता फ्लैट और कहाँ अक्षरज्योति की ये मंजिल? कल जब सब यहाँ आए तो यही पूछा कि इतना सब सामान उसमें कैसे रखते थे? उसमें कैसे रहता था? बट, वो भीड़ाभक्ति! अब **ये बिल्डिंग बढ़ा, तो भीड़ाभक्ति भी बढ़ेगी।** आज **गुणातीतानंदस्वामिजी का प्रागट्य दिन यानि – 'भीड़ाभक्ति का दिन'!** तो आप उसमें से हमें पास कर देना, **आपकी कसनी में अखंड रखना** और अखंड 'भुलकुं' के मार्ग पर – जो आपने ड्रीम किया है, आपको हमें जैसा बनाना है – ऐसा बना कर ही छोड़ना। वो ही प्रार्थना। सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

गुरुहरि स्वामिजी –

शरद्पूर्णिमा का मंगलकारी दिन! **साकार ब्रह्म गुणातीतानंदस्वामिजी का प्राकट्य दिन!** भगवान स्वामिनारायण जब तक पृथ्वी पर रहे, तब तक **गुणातीतानंदस्वामिजी ने एक ही काम किया – सभी संबंध वालों की सेवा! सभी को भोजन कराने की सेवा! सभी के बर्तन मांझने की सेवा!** वड़ताल की धरती पर तीन सौ संत थे; उनमें से दस-पंद्रह के शरीर नरम-गरम रहते, बीमार रहते ही। उन सभी की वे सेवा करते थे। गुणातीतानंदस्वामिजी को याद करते हुए मैं एक ही विचार में रहता हूँ कि – संबंध वालों की कैसी अद्‌भुत सेवा और महिमा! खुद खूब गरीब बन कर वे वर्ते हैं।
गरजु बन कर इन्होंने सेवा करी है और... गुलाम की अदा से सभी का टोकना सहन किया है। इतने छुपे वर्ते- इतने छुपे वर्ते।
वड़ताल की धरती पर ऐसा कोई संत बाकी नहीं रहा होगा, जिसने गुणातीतानंदस्वामिजी की उपेक्षा ना की हो।
जब हम वड़ताल गए थे, तब गोमती नदी के किनारे पर बापा बोले थे –
गुणातीतानंदस्वामिजी हँसते ही रहते-हँसते ही रहते;
टोकने वाले बहुत अधिक थे। भावना से सभी का स्वीकारने वाले अकेले थे।
हम सभी को इस बात का खूब विचार करना है। **कैसा भव्य स्वरूप? 'अक्षरब्रह्म' के सिवा कुछ हरा-भरा नहीं है।** किसी फल में कोई स्वाद नहीं, कोई फूल में सुगंध नहीं। धरती में ६४० करोड़ मानव देहधारी घूमते हैं। ब्रह्मांड में जितने हैं, उन **सभी जीवात्मा में व्यापक स्वरूप में 'अक्षरब्रह्म' हैं; अंतर्यामी और सर्वज्ञ, कर्मफल प्रदाता स्वरूप में 'भगवान स्वामिनारायण' विराजमान हैं।**

हम सभी को एक ही काम करना है। हमें एक सुदंर मौका मिला है।
१. गुरुजी जैसा पप्पाजी के कृपापात्र ऐसे संत,
२. ऐसी अद्‌भुत सूझ देने वाला,
३. आत्मीयता से जतन करने वाला,
तुम्हारे सुख से वो सुखी, तुम्हारे दुःख से वो दुःखी – ऐसा साधु है ये।
भक्तों का ही चिंतन-मनन और उनके आकार से जीने वाला साधु!
हमारी एक फर्ज़ है बस – जितना हमारा शिक्षापत्री के मुताबिक स्वधर्म, **जितनी गुरुजी के साथ की सरलता, उतना हमारा 'अक्षरब्रह्म' का शरीर बंधता है। जैसे-जैसे सरलता बढ़ती जाए, वैसे-वैसे भागवती तनु मिलता जाए।** पर, मन-बुद्धि से पार की सरलता चाहिए...

गुरुजी का खूब शरारती स्वभाव, लेकिन वो महंतस्वामी को पूछ कर करते और वे भी उनके साथ मिल जाते। पर, **पक्का करके रखा था कि बापा के पास सरल बन कर जीना है। बापा के स्वधाम जाने के बाद प.पू. गुरुजी को काकाजी के प्रति खूब प्रीति! फलस्वरूप उनके पास वे टोटल सरल होकर वर्ते।** फलस्वरूप वे कृपा के पात्र बने। **गुरुजी** ने दो ही काम करे – **सरलता से वर्ते** और जब सरल ना हो सके – किसी का स्वीकार ना कर सके, तब खूब भजन करते... **भजन करना उनका स्वभाव था। यही रीत हम सभी को रखनी है।** हम जितने सरल होकर जीएंगे, अधिकार देकर जीएंगे-शायद मनुष्यभाव आ भी

जाए, तो भजन कर लेना। यह हम सब की परम पवित्र फर्ज़ है...

अक्षरज्योति में गुरुजी के साथ मैं आया; यहाँ मकान में प्रवेश करते ही मुझे हुआ कि **बहनों के लिए गुरुजी ने कितनी सुंदर व्यवस्था कर दी है? कैसी प्रीति होगी? गुरुजी जहाँ रहते हैं– वो मंदिर तो अभी खूब अधूरा है।** बहनों के लिए तो अद्‌भुत व्यवस्था कर दी है। **साधकों के लिए परफॅक्ट मकान ... लड़कियों को किसी भी प्रकार की कोई तकलीफ ना पड़े–यह उनकी भावना!**

लड़कियों की जवाबदारी खूब बढ़ जाती है। हमारी एक फर्ज़ है कि मन-बुद्धि कभी शायद सरल ना रह सकें, तब भजन करके बल माँगा करना। रजोगुण, तमोगुण, सत्त्वगुण के प्रवाह जब बहते हैं, तब सरलता नहीं रहती; पर तब **मन-बुद्धि को एक बाजू में रख कर सरल वर्तना वही सच में प्रीति का लक्षण है।** काकाजी के साथ गुरुजी की प्रीति का दर्शन हमने किया था। काकाजी को मना भी कर देते थे कि नहीं हो पाएगा, लेकिन फिर भजन कर लेते। बहुत सरल होकर वर्ते। काकाजी ने उन पर अधिकार भी किया...

हम सभी से कुछ हो सके, ऐसा नहीं है। **जैसे-जैसे सरलता बढ़ती जाएगी, वैसे-वैसे हमें बुद्धियोग मिलता है। संत के संकल्प से भगवान बुद्धियोग देते हैं और तब संत की मर्जी में वर्ता जाता है।** हम सभी को यही संकल्प करना है कि **मन माने या नहीं माने, बुद्धि माने या नहीं माने–सरल रहना। फलस्वरूप बुद्धियोग मिले–फलस्वरूप राजी करने की भावना प्रगटे... फलस्वरूप बाप-बेटे का संबंध स्थापित हो।**

हम सभी को शरद्‌पूर्णिमा के शुभ मंगलकारी दिन पर एक ही संकल्प करना है – भगवान स्वामिनारायण की सर्वोपरि निष्ठा सहित सत्पुरुष के साथ मैत्री और प्रीति। **'सरलता' शब्द में प्रीति समाविष्ट है।** जिसकी जितनी मन-बुद्धि पार की सरलता, उतनी उसकी प्रीति कही जाए। हमें ऐसी प्रीति करके जीना है... **हमारी साधना बहुत सरल है। परंतु निष्ठा अटल चाहिए... दो शब्द पक्के रखने हैं – वचन में सरलता और निरंतर कर्ता-हर्ता मानना! एक तू ही...**

काकाजी के वचन से गुरुजी यहाँ आए... काकाजी को राजी करने सरल होकर वर्ते... प्रेमस्वामी उनके साथ तब होते थे; तो उन्होंने एक बार बताया था कि **गुरुजी मन से भले हार जाएं, लेकिन काकाजी के पास सरल वर्ते।** काकाजी ने कहा मुकुंद भजन का ही एक आधार रखना है और गुरुजी वह लेकर लग पड़े। प्रेमस्वामी बताते कि **रात को उठ कर भी वे भजन करते थे।** ऐसे पुरुष हमें मार्ग बता कर देख रहे होते हैं।

❋ सरलता ❋ भजन ❋ प्रसंग पर निष्ठा

ये तीन शब्द लेकर हम लग पड़ें, तो गुरुजी के साथ संबंध होगा, होगा और होगा ही। हम सभी को इतना ही पक्का करना है...

आज के शुभ मंगलकारी दिन भगवान कृष्ण, भगवान राम, भगवान शिवशक्ति, भगवान स्वामिनारायण, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी, महंतस्वामिजी सभी के चरणार्विंद में एक ही प्रार्थना है कि – हमें **ऐसा बल देना जिसके फलस्वरूप सरलताभरा संबंध रख कर, संप-सुहृद्‌भाव-एकता रख कर आपके साथ संबंध बांध सकें।** महाराज इसके लिए सभी को खूब बल दें, यही प्रार्थना!

पू. मल्कानी अंकल –

...**ये अक्षरज्योति की बिल्डिंग के लिए जिन-जिन्होंने मदद करी उनको धन्यवाद!** मैंने अभी एक बात पढ़ी कि एक सज्जन प्रभु से बोलते हैं कि–*प्रभु! मैं मेरी जिंदगी से घृणा करता हूँ-दुःखी हूँ।*
तो, प्रभु उनसे कहते हैं कि – *आपको किसने बोला कि आप अपने जीवन से प्रेम करो।*
फिर प्रभु ने बोला कि – *मेरे से प्रेम करो, फिर देखो कि आपका जीवन कैसा सुंदर और खुश खुशहाल होता है।*

यहाँ भी **२०-२२ साल से जो मैं आ रहा हूँ,** तो मुझे **यही महसूस होता है कि भगवान स्वामिनारायण और उनकी पूरी परंपरा के जितने संत हैं, उनसे प्रेम करो और मौज करो...** सुबह मैं प.पू. गुरुजी को, मधर ज्योति बहन को अपनी गरज से फोन भी इसीलिए करता हूँ कि दिन – सवेरा जो चालू होता है, वो एक सही रास्ते पर चालू हो। **हम यहाँ आते हैं**, उसका कारण क्या? और आते ही रहते हैं, **क्योंकि मन में एक बात बैठ गई है-एक विश्वास हो गया है कि ये जो मंदिर है, वो चार दीवारों का है ही नहीं। ये हमारी आत्मा का घर है। इट इझ धी ओन्ली होम फॉर अवर सॉल – फॉर अवर आत्मा। अपनी गरज से हम आते हैं।**

इन २०-२२ सालों में हमारा विश्वास बढ़ा ही है। लाईफ में एक बेहतरी आई हुई है, एक सुधार आया हुआ है... **संत की महिमा सारी तो नहीं, पर कुछ समझ सकते हैं।**

तो **आज के दिन एक प्रार्थना** स्वामिजी के चरणों में, गुरुजी के चरणों में, मधर ज्योति बहन के चरणों में कि अंतर से ऐसी भावना आए कि **अपनी मर्जी से हम कुछ ना करें, प्रभु और प्रभुधारक संत की मर्जी से हम करते ही रहें और खुशी से करें।** सहजानंदस्वामी महाराज की जय हो।

✡✡✡

‘बड़े घर दीवाली शिविर’

अब की बार **‘बड़े घर दीवाली शिविर’** तो अमदावाद-मुंबई के मुक्तों के आते ही – **३ नवंबर को शुरु हो गई!** भक्तों के आने से ताड़देव परिसर का पूरा माहौल मानो शुभ अवसरों के आगमन की आहट देने लग गया... शिविर के प्रथम ही दिन ‘बड़े घर दीवाली शिविर’ की शुरुआत का स्रोत बताते हुए प.पू. गुरुजी ने कहा कि–

*‘१९९० में हमने मई के महीने में होने वाले **‘अनुष्ठान शिविर’** की शुरुआत **पू. भाईस्वामी** के कहने पर करी थी। तब मुझे ऐसा था कि भले ही हम यह शिविर शुरु कर रहे हैं, लेकिन धीरे-धीरे तो मैं और भाईस्वामी दो ही दिखाई देंगे। परंतु, ऐसा नहीं हुआ। और... हम देखते हैं कि अप्रैल अंत या मई की शुरुआत से ही बाहर से भक्तों के संदेश आने शुरु हो जाते हैं कि फलां तारीख को हम इस शिविर के लिए आ रहे हैं।*

*इसी तरह ये **‘बड़े घर दीवाली शिविर’** की शुरुआत मानो **पू. मल्कानी अंकल** ने करवाई और आज हम देखते हैं कि रक्षाबंधन के बाद ही अमदावाद-मुंबई के हरिभक्तों की इस शिविर में आने के लिए रेलवे या प्लेन की बुकिंग शुरु हो जाती है...’*

सो, **पू. मल्कानी अंकल से ही प.पू. गुरुजी**

ने इस शिविर का दीप प्रज्वलित करवाया। और... शिविर में 'श्रीजी चरित्र विहार' पुस्तक में से महाराज के समय के प्रेरणादायी प्रसंगों का पठन करवा कर प.पू. गुरुजी निरूपण करते।

५ नवंबर की सायं तो ताड़देव के परिसर में भगवा रंग ही छा गया... जब **प.पू. ज्योति बहन** की निश्रा में **गुणातीत ज्योत की १५० बहनें** हरिद्वार-छपैया में **'गुरुहरि पप्पाजी शाश्वत् प्रसादी यात्रा'** करने के बाद प.पू. पप्पाजी की मूर्ति का दर्शन करने आईं। अक्षरज्योति के नए भवन में उन्होंने खूब हर्षोल्लास व धुन-भजन से प्रवेश किया। **'नैमिषारण्य'** हॉल में दाखिल होते ही सभी बहनें आनंद से गरबा करने लगीं और पूरे वातावरण में दिव्यता छा गई। तत्पश्चात् **प.पू. ज्योति बहन** ने प.पू. हंसा दीदी द्वारा भेजी आशीर्वाद रूप मूर्ति प.पू. दीदी को भेंट दी और **प.पू. पदु बहन** ने उसका मर्म समझाया; फिर... 'कोल्ड कॉफी वीथ आईसक्रीम' का प्रसाद लेकर सभी मंदिर गए। सायं हर रोज की भाँति चल रही 'बड़े घर दीवाली शिविर' में प.पू. गुरुजी ने आज 'श्रीजी चरित्र विहार' ना पढ़वा कर, प.पू. पप्पाजी द्वारा १९९५ में प.पू. गुरुजी को लिखित खूब प्रेमभरा और अंतर के अद्‌भुत अपनेपन का दर्शन कराता मार्मिक पत्र पढ़वा कर सभी को दीवाली के दिनों में मानो आध्यात्मिक भोजन परोस दिया। गुणातीत ज्योत से आए सभी मुक्तों ने वह प्रसाद लिया और 'गुजराती समाज' की ओर जाने उन्होंने प्रस्थान किया।

७ नवंबर– धनत्रयोदशी के दिन भी दोपहर को प.पू. ज्योति बहन, प.पू. पदु बहन के साथ गुणातीत ज्योत के अन्य मुक्तों का दोबारा दर्शन हुआ। प.पू. पप्पाजी की मूर्ति के दर्शन करके सभी ने प्रसाद लिया और 'आश्रम एक्सप्रेस' से अमदावाद जाने सभी मुक्त स्टेशन के लिए रवाना हुए।

सायं **प.पू. गुरुजी की निश्रा में** पू. यज्ञप्रियस्वामी ने **धनत्रयोदशी की विशिष्ट महापूजा** करी। साथ ही साथ **सौ. शोभनाभाभी के मुंबई निवासी भाई प.भ. श्रेयसभाई व्यास** के सुपुत्र **चि. आनंद (रघु)** का यज्ञोपवीत संस्कार भी इसी दिन होना था, सो प.पू. गुरुजी की आज्ञा से **प.भ. विनोदभाई पुरोहित** खास यह विधि करवाने मुंबई से आए। उन्होंने ना केवल विधिवत यज्ञोपवीत संस्कार करवाया, बल्कि 'यज्ञोपवीत' का क्या महत्त्व होता है एवं उसके क्या नियम होते हैं, वह खूब दिलचस्पी से बताया। यह सब देख-सुन कर कईयों को हुआ कि जीवन में ऐसी विधि पहली बार देखी और यज्ञोपवीत का गहरा महत्त्व भी जानने को मिला। १४ वर्षीय चि. आनंद भी एक छोटे बालक की भांति प.भ. पुरोहितजी के कहे मुताबिक सारी विधि कर रहा था और सारे माहौल में दिव्यता का एहसास हो रहा था...

दिन जाते हर वर्ष की भांति **१० नवंबर** को तिथि के मुताबिक **अन्नकूटोत्सव** के रूप में ठाकुरजी को थाल अर्पण करने का दिन भी आ गया। इसी के साथ एक अन्य शुभ अवसर भी प.पू. गुरुजी ने जोड़ा था। दिल्ली गुणातीत समाज के हमारे पुराने जोगी **प.भ. कीर्तिभाई जानी** के सुपुत्र **प.भ. प्रणव (पिन्टू)** का विवाह **जगरांव के प.भ. अशोक शर्माजी** की सुपुत्री **सौ. कां. रूचिका** के साथ आज ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज की **'पुष्प समाधि'** पर होना था। **यह विवाह भी एक आदर्श रूप ही था, जब प.पू. गुरुजी की आज्ञा से मानो गुणातीत बिरादरी में गुजराती और पंजाबी परिवारों का संबंध हुआ।**

यूं, प.भ. राकेशभाई एवं प.भ. विनोदजी (पंजाब) के भजनों का लाभ एवं प.पू. गुरुजी द्वारा नए वर्ष

की आशिष प्राप्त करने के पश्चात् दिल्ली–सरकार के **माननीय मंत्रीश्री डॉ. ए. के. वालियाजी, पू. मल्कानी अंकल, प.भ. अनिल गुप्ताजी** एवं अन्य कई हरिभक्त **प.पू. गुरुजी के साथ अन्नकूट आरती के लिए ठाकुरजी के हॉल में गए।** यहाँ **प.भ. राकेशभाई, प.भ. विनोदजी, प.भ. हृदय वर्मा** द्वारा थाल गाकर करीब **६५० व्यंजनों का भोग लगाने के बाद 'अन्नकूट' आरती हुई।**

इसी दौरान ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज की पुष्प समाधि पर **प.भ. प्रणव एवं सौ. रूचिका के विवाह** की सारी रस्में प.पू. दीदी की निश्रा एवं आत्मीय मुक्तों की उपस्थिति में अत्यंत दिव्यता के माहौल में संपन्न हुई। कई तो यह विवाह देख कर आश्चर्य में थे, तो कई इसकी सराहना करते थकते नहीं थे।

आरती के पश्चात् प.पू. गुरुजी एवं सभी हरिभक्त कढ़ी–चावल एवं मिक्स सब्जी का महाप्रसाद लेने आ गए। तो, दूसरी ओर प.पू. दीदी के साथ नवविवाहित दंपति एवं सभी बाराती-घराती ठाकुरजी के हॉल में ऊपर गए और अन्नकूट के दर्शन करके वे भी महाप्रसाद लेने गए। दोपहर को करीब चार बजे सौ. रूचिका की विदाई हुई; तब प.भ. अशोकजी एवं. सौ. आदर्श भाभी वियोग की घड़ी से थोड़े ढीले हो गए थे, परंतु साथ ही **खुशी भी थी कि बेटी किसी गैर घर में नहीं, बल्कि सत्संगी के घर जा रही है।**

विदाई के पश्चात् हर वर्ष की भांति श्री ठाकुरजी के समक्ष लगा अन्नकूट का प्रसाद उपस्थित हरिभक्तों को वितरित किया गया। साथ ही बहनों-भाभियों ने अन्नकूट के बर्तन मांझने की अमूल्य कारसेवा भी शुरु की। और... यह सेवा करने के बाद सभी ने अपने-अपने घर एवं बाहर से आए हरिभक्तों ने अपने ठहरने के स्थान पर प्रस्थान किया...

पिछले वर्ष की भांति **पू. हंसाबहन संघवी** के निमंत्रण पर **१५ नवंबर 'लाभपंचमी'** के दिन करीब तीन सौ हरिभक्त **'गुजरात एपार्टमेन्ट्स'** में प.पू. गुरुजी के आशिष प्राप्त करने गए। प.पू. गुरुजी के आसन की पृष्ठभूमि पर एक खूब रहस्यमय दृश्य लगाया था। एक ओर श्रीजी महाराज की लुभावनी मूर्ति थी और उनकी मूर्ति से थोड़ा नीचे पाँच-छः कठपुतलियाँ नाचती हुई दिखाई थीं। वहाँ पर गुजराती में सूत्र लिखा था कि –

कोई कुछ भी कर नहीं सकता,
प्रगट प्रभु जो करवाते हैं,
वही कठपुतली की भांति
सभी कर रहे होते हैं।

आज की सभा में भी महाराज का प्रसंग पढ़वाते हुए निरुपण करके **प.पू. गुरुजी ने 'बड़े घर दीवाली शिविर' की पूर्णाहुति करी।** सभा के विसर्जन के बाद प.पू. गुरुजी की आज्ञानुसार भिन्न-भिन्न घरों में बने, पर फिर भी एक ही स्वाद लिए 'सुहृद्भाव के प्रसाद' को सभी ने ग्रहण किया...

और... १६ नवंबर की दोपहर को अमदावाद-मुंबई से आए मुक्तों की विदाई के समय उन सबकी आँखों में सहज अश्रु देख कर दिल्ली के मुक्तों का हृदय भी गिलगिला हो गया। परंतु, उनकी विदाई अब हर वर्ष होने वाली 'बड़े घर दीवाली शिविर' की गवाही भी देती थी...

('बड़े घर दीवाली शिविर' में प्रगट संत के संबंध से सदैव - सर्वथा सुखी रहने प.पू. गुरुजी द्वारा दी गई मार्मिक सूझ के रहस्यरुपी सूत्र से सभी मुक्त 'भगवत् कृपा' के अगले अंक से लाभान्वित हो पाएंगे।)

✡✡✡

अन्नकूट का कृपाप्रसाद

...आज बड़ी खुशी का दिन है। एक तो नया साल! अन्नकूट और... साथ ही – दिल्ली गुणातीत समाज का स्नेहमिलन! सुबह मैं बाहर बैठा था। पंजाब से आए भक्तों का तांता लग गया था। मैं बड़ा खुश हो गया कि इस बार 'अन्नकूट' पर काफी भक्त आ गए; अब सत्संग के प्रति की सब की भावना में बढ़ोतरी हो गई लगती है। पर, सेवक ने बताया कि गुरुजी, ये तो अपने गाँव की लड़की की शादी में आए हैं। 'अन्नकूट के लिए आए हैं' – यूं ये बोलेंगे, लेकिन ये अपने गाँव की कुड़ी की शादी में आए हैं। मैंने कहा – कोई हर्जा नहीं, अपना सत्संग भी तो एक पारिवारिक सत्संग ही है – कुटुंबभावना का सत्संग है। गुजरात वाले भी ऐसे हैं – खास करके ये लेडिझ जो अमदावाद से आई हैं। दिखावा किया कि हम तो **इस बार 'शिविर' में** बहुत पहले से आ गए हैं। दरअसल तो वे अपने भांजे की शादी की रस्मों में झूमने आई हैं। बहुत 'साभा चतुर' कही जाएं! जॅन्ट्स स्ट्रेईट फॉरवर्ड हैं कि – 'हम अगले दिन ही आए हैं, शादी में आए हैं'। वे दिखावा नहीं करते है कि हम 'अन्नकूट पर' आए हैं। फिर भी, मैं चाहूँगा कि हर साल आप सब अन्नकूट पर ऐसे आते रहो। इससे फायदा मुझे नहीं है, फायदा आपको है। और इस फायदे का आपको इस साल पता भी लगेगा कि हमने दिल्ली मंदिर में ठाकुरजी के – अन्नकूट के दर्शन करे – फलस्वरूप, हमारा नया साल हर प्रकार से – तन से, मन से, धन से, आत्मा से 'सुखकारी' रहा। चलो, 'फॉर एनी रिझन' - आप आए तो सही।

एक बार अपने यहाँ अन्नकूट पर बोर्ड लगा था – 'आप आए हो ना!' हमारे पप्पाजी तो कहते – 'नंदे या वंदे!' **हम यह सारा ज्ञान बोलते तो हैं। लेकिन, इसे अन्डरस्टेंडिंग में लेकर जीते बहुत कम हैं।** यह बोलना आसान है कि – 'नंदे या वंदे'। पर, सत्संग की कोई बुराई करता है, तो उसके प्रति इरीटेशन हो जाता है। लेकिन तब भी उसको गले लगाए ऐसे काकाजी या पप्पाजी जैसी विभूतियाँ 'बहुत विरल' होती हैं। सो ही गुणातीतानंदस्वामिजी ने अपनी बातों में कहा कि – **स्वामिनारायण के सिद्धांत को – अभिप्राय को हम स्वामिनारायण वाले ही अभी समझे हुए नहीं हैं।** इसी की – गुजराती में कहते हैं ना कि – **'मोंकाण'** है – जिससे कि समाज में एक इरीटेशन रहता है कि **'स्वामिनारायण वाळा तो आवा - स्वामिनारायण वाळा लोभिया'**; क्योंकि स्वामिनारायण के प्रिंसीपल से वाकई हम जीते नहीं हैं। काकाजी तो हमेशा कहते थे कि मेरी तो 'देना' बैंक है, 'लेना' बैंक नहीं है। प्रभु के दरबार में से तो 'ले जाओ, ले जाओ'। तो ये बात हम कभी भूलें नहीं।

...देखो, ये शादी भी कैसी है? मैं सच में ये अशोकजी के परिवार पर बहुत खुश हुआ। पहले ये पिन्टू की शादी के बारे बातचीत चलती रहती थी। तो आनंदी दीदी ने मुझे पुछवाया कि जगरांव वाले अशोकजी की जो लड़की है, उसका पीन्टु के लिए सोचें तो? मैंने कहा कि मुझे इसमें ज्यादा समझ नहीं आएगी। आप लोग बातचीत करते रहना। फिर धीरे - धीरे वो बातचीत आगे बढ़ी होगी। इस दौरान मैं एक बार पंजाब जा रहा था, तो मैंने दीदी से पुछवाया कि आपने अशोकजी से बातचीत करी है? उन्होंने कहा कि – हाँ करी है कि यहाँ एक लड़का है। मैंने समझा कि बात करी होगी कि 'ये कीर्तिभाई का लड़का है वगैरह...'। मैं भी कई बार किसी से कुछ पूछता - करता हूँ; फिर उसका जो रिप्लाई आता है, उसकी ओर मेरा माईन्ड रहता भी नहीं है कि क्या

जबाव आया-करा।

ऐसे हम जगरांव में अशोकजी के घर रुके थे। तुम्हें पता है कि वहाँ मैं हॉल में बैठा रहता हूँ। फिर बाथरूम जाना करना हो, तो रूम में से जाते हैं। एक बार यूं जाते-जाते मैंने सोचा कि मैं अशोकजी से पूछूँ कि ये रिश्ता पंसद है-पक्का करें क्या?

मैंने वैसे ही अंदर बुला कर पूछा कि दीदी ने तुम्हें शादी की बात करी है ना?

बोले – हाँ, करी है कि दिल्ली में एक लड़का है।

मैंने कहा कि कैसे करना है?

तो बोले कि हम तो जैसे आप कहो – आपके ताबेदार हैं।

फिर, दोबारा मैंने पूछा कि आपको पसंद है? मुझे ऐसा था कि इनको प्रणव (पिन्टू) का ख्याल होगा।

तो कहे – गुरुजी, कौन लड़का है – हमें नहीं पता।

मैंने कहा कि इतना तो पता है ना कि गुजराती है।

तो कहे – गुरुजी, हमें पंजाबी, गुजराती, हरियाणवी, मद्रासी से क्या लेन-देन? हमें तो आपसे लेन-देन है। हमने लड़का नहीं देखा। दीदी ने जो सॅट कर दिया है, तो अच्छा ही होगा और यही बहुत बड़ी चीज है। कमाल की बात है ना? मैं तो ये समझता हूँ कि इवन शोभना भाभी को भी अगर ये लड़की का पहले से ख्याल नहीं होता, तो कहती कि एक बार 'लड़की' देखने तो दो! ना ये माँ-बाप ने कहा है कि लड़का देखने दो, ना वो लड़की ने भी कहा है कि जिसके साथ मुझे जीवन जीना है, वो लड़का मुझे बताओ तो सही। बहुत बड़ी चीज है – यह। अनइमेजिनेबल!

मुझे भी अंदाजा नहीं था कि इतनी हद तक भक्तों को **संतों का** भरोसा होगा। यहाँ एक चीज सामने आती है कि संतों की जिम्मेवारी खूब बन जाती है। ऐसा **भरोसा रखने वाले भक्तों के साथ अगर हम पॉलीटीक्स खेलें** या मल्कानी अंकल जैसे कहते हैं कि **डिप्लोमसी करें, तो प्रभु के हम बड़े गुनहगार बन जाते हैं।** ये बहुत समझने की बात है। यूं, **ये ऑर्डीनरी शादी नहीं है।**

समय को देखते हुए, आज की **सभा में अब** सत्संग की बातें ज्यादा नहीं करनी हैं। **बस ये सीख लेकर ही जाएं कि जैसा भरोसा अशोकजी ने किया है, ऐसे ही भरोसे से हम प्रभु के ऊपर सारा जीवन का भार सौंप कर चलें।** हम गाते तो हैं कि **'सघळी चिंता तुजने सोंपी'** – लेकिन ऐसा होता नहीं है। हम अपने पर ही सारा बोझ लेकर घूमते रहते हैं। हमारे स्वामिजी ने एक बार बात करी थी...

धरती पर बस्ती खूब बढ़ गई।

तो भगवान ने शेषनारायण से पूछा कि– बस्ती बढ़ गई है, तुम्हें बोझ तो नहीं लगता?

शेषनारायण ने जवाब दिया – नहीं प्रभु, सब अपना बोझ अपने सिर पर ही लेकर घूमते रहते हैं; मेरे पर कोई बोझ नहीं है।

देखो, ये पॅरेबल जरुर है। लेकिन, ऐसे शास्त्रों ने – महात्माओं ने – ऋषियों ने ये जो बातें करी हैं, वो हमें कुछ तो सीख दे ही जाती हैं कि जब हमें ऐसे प्रभु का संबंध हुआ है, तो ऐसा बोझ लेकर हम क्यों घूमा करें?

...साधु हमारे जीवन में आता है हमारे संसार में प्रभु बसा करके हमें हल्का फूल-'टॅन्शन फ्री'

रखने के लिए। मैं नहीं कहता कि कॅयरलेस, पर 'कॅयर फ्री' जीवन जरुर जीएं। पायलट स्कीम पर यहाँ सारा ये काम चलता है।

तो, फिर से कहता हूँ कि गुजराती में कहते हैं ना **'लीटा भेगो लहरको कर्यो '** – यह जिन्होंने किया हुआ है – खास करके ये पंजाब वाले। भई, तुम लोगों को क्या गोदा वागता है? दीवाली की रात को निकल कर सुबह यहाँ आना है... तुम्हारे लिए चाय तैयार, गरम पानी तैयार... सब कुछ तैयार रखते हैं। तब भी 'टें-टें' करते रहते हो! **नए साल में ठाकुरजी के दर्शन हो जाएं, काकाजी की समाधि की परिक्रमा हो जाए; कितना बड़ा पुण्य उदय हो जाए?** हर अन्नकूट पर तो दर्शन के लिए रेग्युलर आया करना। **समझें तो, उसमें काम भी अपना ही होने वाला है!**

...ये दिवाली के मॅसेज में जैसा लिखा है; यूं नए साल पर हर एक को रहता है कि ये साल सुखकारी निकले। और... हम बोलते भी हैं कि सुख तो एक नारायण के चरणार्विंद में है। इसी बेझीझ पर कार्ड में बात लिखी है कि हमें **सदैव सुखी रहना हो, तो 'भगवान , संत और सत्संगी की निष्ठा' रखें।** स्वामिनारायण ने ये बहुत बड़ी बात बताई है। **भगवान स्वामिनारायण की ये सबसे बड़ी देन है – अनपॅरेलल फिचर ऑफ स्वामिनारायण फेईथ!**

यह तो सब मानते हैं कि **भगवान के चरणार्विंद में सुख है। भगवान का भजन करेंगे तो सुख मिलेगा।** सो ही, जीवों को सुखी करने के लिए – राम कहो, कृष्ण कहो, माता कहो, महादेव कहो, स्वामिनारायण कहो – सारे अवतार धरती पर आए हुए हैं। हमारे कोई साधन प्रभु को पहुँच नहीं सकते। सो, प्रभु स्वयं मानवस्वरूप में धरती पर आए। ये एक पूरा सायन्स है। मैंने पहले भी तकरीबन हर एक सभाओं में यह बात करी है कि कई पूछते हैं कि तुम ऐसा क्यों कहते हो कि **'सर्वोपरि स्वामिनारायण'**! इसकी एक वजह है। **ये कोई कम्पेरिझन नहीं है कि ये भगवान छोटे और ये बड़े-ऐसे ढंग से नहीं है।** लेकिन, कहने का **तात्पर्य यह है कि मॅनीफेस्टेशन से उसकी एफीकसी रहती है।**

गुजरात में भादरा गाँव है – गुणातीतानंदस्वामी का प्राकट्य स्थल। वहाँ रेलवे स्टेशन बन रहा था। कारसेवा चल रही थी। वहाँ एक प्रश्न निकला कि उपासना कौन-सी बड़ी? माता की, महादेव की, कृष्ण की, राम की, स्वामिनारायण की? तो, बापा ने **'स्वामी की बात'** के आधार पर समझाया कि वैराटनारायण में से सारे अवतार प्रगट हुए। **कृष्ण** भी **वैराटनारायण में से प्रगट हुए**... लेकिन वैराटनारायण धरती पर नहीं आए थे, कृष्ण परमात्मा धरती पर आए। इसलिए उपासना कृष्ण की बड़ी। 'कृष्ण' के नाम का हम भजन करेंगे, तो 'अर्चिमार्ग' से वो भजन उसको पहुँचेगा। **वैराटनारायण को तुम्हारा भजन पहुँच नहीं सकता, क्योंकि मानवस्वरूप में वे धरती पर आए नहीं थे। कृष्ण परमात्मा आए।** इसी तरह रामचंद्रजी मानवस्वरूप में धरती पर आए। स्वामिनारायण मानवस्वरूप में धरती पर आए।

स्वामिनारायण ने इससे भी आगे बढ़ कर बड़ी बात ये करी कि इन्होंने ऐसे गुणातीतभाव को पाए हुए संतों की एक परंपरा अखंडित रखी – जिनके द्वारा वे धरती पर मानवस्वरूप में अखंड प्रगट रहे। हम कहते हैं ना कि – **'सुखी' करने के लिए ऐसे अवतार आते हैं। स्वामिनारायण ने जीवों को 'सदा सुखी' करने के लिए धरती पर अपना प्राकट्य मानवस्वरूप में ऐसे संतों द्वारा अखंड रखा!** ऐसा नहीं है कि एक

ज्योति झबूकी, वो अंतर्धान हो गई – फिर कोई आधार ही नहीं। कई आश्रमों में तुम देखोगे, बड़े-बड़े सिद्ध संत प्रगट हुए और उस समय सारा माहौल चेतनामय बन गया हो। लेकिन उनके जाने के बाद जिसे कहे ना कि **'टाढू ढप'**! ऐसा स्वामिनारायण ने नहीं होने दिया। लिविंग रखा! सो, हमारे मल्कानी अंकल ने मुझे कहा था कि गुरुजी, हमारे विझीटिंग कार्डस के पीछे लिखो **'लिविंग मंत्र'**! लिविंग है, क्योंकि उसको मॅनीफेस्ट करने वाले काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी, प्रमुखस्वामी महाराज जैसे मौजूद हैं। देखो, आज इत्तफाक प्रमुखस्वामी की मूर्ति भी यहाँ आ गई है!

तो, **स्वामिनारायण भगवान ने ये प्रबंध करा कि हम 'सदा सुखी' रहें! सुख की एक वॅव आ गई, ऐसा नहीं, कॉन्टिन्यूअस रखी!**

काकाजी और पप्पाजी ने उसमें एक और रिसर्च करी। सुखी होने में भी – विधाउट गोईंग इन्टु रिग्रस तपस्या – ट्रबल्स हम आसानी से कैसे सुखी हों? **इन्होंने कहा कि ऐसे संत के संबंध वाले भक्त लोग जो हों – मुक्त लोग जो हों, उनके साथ प्रीति रखेंगे, तो हम आसानी से सुखी रहेंगे। ये एक नई डॅवलप्मेन्ट है।**

पहले तो मानवस्वरूप में प्रभु के अस्तित्व को कोई मानने तैयार नहीं था। धीरे-धीरे **'स्वामिनारायण'** – वो मानवस्वरूप में 'प्रभु' धरती पर आए हैं – यह एक झंडा गाढ़ा गया। फिर ब्रह्मस्वरूप संतों के द्वारा वे – 'प्रभु' हमेशा धरती पर प्रगट हैं, वो मानने में कई-कितने साल निकल गए। शास्त्रीजी महाराज ने ब्रह्म-परब्रह्म की प्रगट की युगल उपासना को श्री अक्षरपुरुषोत्तम के मंदिरों के निर्माण द्वारा व्यापक रूप में फैलाया और...ऐसे संतों की परंपरा द्वारा हम हमेशा सुखी-सदा सनाथ हैं-यह रहस्य प्रगट किया।

इसमें सायन्स के प्रॉसेस में कॅटलेटिक एजन्ट डाला जाता है जिससे कि प्रॉसेस स्पीडी बन जाए, इसी तरह **काकाजी व पप्पाजी ने** यह **नई बात बताई कि प्रगट संत के संबंध वाले भक्तों को भी ऐसे ही दिव्य मानेंगे – जैसे संत को मानते हैं; तो प्रकृति व प्रारब्ध का परिवर्तन वॅरी इझीली-आसानी से हो जाएगा।** वैसे ये नई बात नहीं है। जैन समाज भी **'घंटाकरण देव'** की जो बात है, वो **'भगवदी'** की ही बात है। रामचंद्रजी की परोक्ष की उपासना में जो कहा जाता है कि **'हनुमान'** का पूजन करो – वो भी **'भक्त'** की ही बात है।

...मैं हमेशा रामजी की सेना की बात तो करता ही हूँ। पर, बेचारे हनुमानजी को अनाविल लोगों ने परेशान कर दिया। नवसारी से ये **दिनकरभाई देसाई** आए हैं। उन्होंने बताया कि अनाविलों को भगवान रामचंद्रजी ने 'ब्राह्मण' बनाए थे। धे वॅर एक्च्युअली भील्स ऑफ धी जगंल। पर, युद्ध के प्रारंभ की पूजा के समय इनको रामजी ने जनोई दी और 'ब्राह्मण' बनाए – जो **'अनाविल ब्राह्मण'** कहे जाते हैं। वहाँ 'अनावल' गाँव में 'शुकलेश्वर महादेव' का एक मंदिर है। रामजी ने प्रसन्न होकर कहा था कि तुम लोगों को जब भी परेशानी हो, तो ये मंदिर में आकर घंटा बजाना, 'हनुमान' आकर तुम्हारा काम कर जाएगा। ये अनाविल लोग – नो डाऊट, धे आर वेरी इन्टेलिजेन्ट; पर बड़े डाउटिंग माईन्ड के होते हैं। तो, एक जने ने जाकर फिज़ूल घंटा बजाया। हनुमानजी तो आ गए। तो, वो कहता है कि मैंने तो टेस्टिंग के लिए बजाया था, काम कुछ नहीं है। एक-दो घंटे के बाद ऐसा दोबारा भी हुआ। तीसरी बार फिर रामचंद्रजी खुद गए कि भई क्या बात है कि फिज़ूल घंटा बजता है। वे यही बोले कि हमने तो टेस्टिंग करने के लिए बजाया था। रामजी ने कहा ऐसे बार-

बार थोड़े कोई टेस्टिंग होती हैं? फिर भी, रामजी तो दयालु प्रकृति के थे सो बोले – अब जब भी कोई प्रॉब्लम हो, तो तुम चार अनाविल मिल कर ये घंटा बजाना; मैं आ जाऊँगा या हनुमान आकर काम कर जाएगा। ये, अनाविल तो कभी एक मत होते ही नहीं। हर एक अपने आपको प्राईम मिनिस्टर ही समझे...

हाँ, क्या बात चल रही थी? प्रारब्ध व प्रकृति का परिवर्तन आसानी से करने की–

देखो, फिल्मों में–सिरियलों में वो रामजी की सेना को जैसे दिखाते हैं वैसे लाईन से थोड़े चलती होगी? लेकिन पप्पाजी ने मुझे एक काग़ज़ में लिखा भी कि **'गरजे गधेड़ाने बाप कहो ने'**। यूं हमारा हर काम प्रभु से आसानी से कराने की ये टॅक्नीक कार्ड में है कि **प्रगट भगवान के भक्तों – वे जैसे भी हों, पर उन्हें दिव्य मान कर, उनके साथ हम कुटुंबभाव से ओत-प्रोत हो जाएं कि ये हमारा परिवार है, तो प्रारब्ध व प्रकृति का परिवर्तन बड़ी आसानी से हो जाएगा। यह लॅटेस्ट और एड्वान्स्ड करामत है – टॅकनीक है!**

...आज पता भी नहीं लगता है कि किसके यहाँ शादी है? यहाँ बराती-घराती हैं, घराती-बराती हैं; सब एक ही हैं। कल लड़की की 'चूड़ा सॅरिमनी' हुई थी। जगरांव से तो अगले दिन कितने लोग आए होंगे? पर, बताते हैं कि सारा हॉल भरा हुआ था! तो, यहाँ वाले ही सब थे ना? ऐसी शादी में आपको आने का और यह दर्शन करने का सौभाग्य मिला। मैं तो कहता हूँ कि – **'अहोहो! यहाँ ऐसे एक समाज का सर्जन हुआ है' – इतना सद्भाव भी लेकर जाओगे, तो प्रभु तुम्हारा काम आसानी से कर देंगे। काकाजी** इसको अलग ढंग से **कहते थे – 'सेवा थाय तो करवी, असेवा नहीं करवी।'** सेवा नहीं हो सकती, पर कहते हैं ना – नुक्ताचीनी ना करा करो। इंग्लिश में कहते हैं कि 'लॅग पुलींग' ना करो। एक-दूसरों के शॉर्ट कमिंग्स, दोष ना देखो। दोष देखना भी है, तो खुद का देखो। जरुर नज़र आएगा कि **अहोहो! ये भक्त लोग कैसे हैं और हम कैसे? हम तो सिर्फ 'हुं, मारो गगो ने मारी गगी' में उलझे रहते हैं। ऐसा जीवन तो जानवर भी जीते हैं। उसमें हमने क्या जिया है? उसकी बजाय पायलट स्कीम पर ये जो काम इन विभूतियों ने शुरु करा है, उस दिव्य परिवार के हम सदस्य बनें।**

हमें आपसे कोई चीज नहीं चाहिए, यहाँ से आप सिर्फ ले जाओ। और... ये बात ले जानी है कि – **'धाम, धामी और मुक्त ही सत्य हैं!'**

हमारे लिए जगत है ही नहीं। गुणातीतानंदस्वामिजी ने ये बात अलग ढंग से करी कि सूर्य के रथ में बैठा हो, उसको अंधकार मिलेगा ही नहीं। इस तरह **भगवान की सेरेछाया में, ऐसे संत में निष्ठा रख कर ऐसे कुटुंबभाव से भक्तों में जो ओत-प्रोत हो जाएगा, उसको दुःख की परछाईं तक स्पर्श नहीं कर सकती।** इस रास्ते पर हम हमेशा अग्रसर रहें और आसानी से सदा सुखी होते रहें – ऐसी प्रार्थना!

...एक बात याद रखना, कुछ भी कह दो – **ऐसा समाज मिलना मुश्किल है।** अभी आपने सवद्दी वाले ये **'वंदन'** को देखा; उसके फाधर को एक्सपायर हुए चार दिन हुए हैं। वंदन तो आ जाए। पर, मेरे एक कहलवाने पर कि हर साल सुरेश आता था; सो अन्नकूट की आरती पर तो तुम्हें आना ही पड़े - इतना कहलवाने पर सुरेश की मिसीस भी फट से आ जाए! ये कल्पना से परे का समाज है। अभी-अभी हमारे स्वामिजी पंजाब गए थे। वे जगरांव जाने वाले थे। पर, अचानक प्रोग्राम कर्टेइल करके 'ही रश्ड बॅक टु हरिधाम'। ये तो कईयों को पता होगा कि वहाँ **'सोखड़ा'** गाँव का सरपंच एक्सपायर हो गया था, सो स्वामिजी

वहाँ लौट गए। आप मेरी बात मानने तैयार नहीं होंगे, पर सुबह जिसका हस्बन्ड एक्सपायर हो गया वो **'हंसा'** सायं ७-७:३० को स्वामिजी को रिसीव करने वडोदरा एयरपोर्ट पहुँची ! कहते हैं ना कि– **'भगवान भजना' कायरों का काम नहीं है।** 'हरिनो मारग छे शूरानो, नहीं कायरनुं काम जोने!' गाँव में रह कर लोक-लाज, रिवाज छोड़ कर ये करना – बहुत कठिन चीज है। घर में हस्बन्ड का बॉडी पड़ा हुआ है और वो सारी मर्यादा को तोड़ कर स्वामिजी को रीसीव करने एयरपोर्ट पर जाए! स्वामिजी के साथ उसको कितना लगाव होगा? ऐसी बातें शास्त्रों में सुनी होंगी। कृष्ण – मानवस्वरूप में वो पारमेश्वरी चेतना थी, तब गोपियों ने लोक-लाज छोड़ी। यूं आज भी धरती पर प्रभु का प्रागट्य है, तभी यह हो सकता है।

तो, **ये सारी घटनाएं साबित करती हैं कि ओहोहो! स्वामिजी, काकाजी, पप्पाजी, प्रमुखस्वामी महाराज जैसों द्वारा भगवान स्वामिनारायण मानवस्वरूप में मौजूद हैं!**

और... जब प्रभु ने इतना आसान-सुलभ कर दिया है, तो हम ये मौका क्यों खोएँ? इसलिए फिर से कहता हूँ कि इस दिव्य समाज में कुटुंबभाव से ओत-प्रोत होकर फुल्ली इन्श्योर्ड एण्ड प्रॉटेक्टेड रहा करें, यही नए साल का आप सभी से अनुरोध है। सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

– प.पू. गुरुजी, १० नवंबर '०७

व्रतोत्सवसूची

(1) दि. 5.12.'07, बुधवार — एकादशी – व्रत

(2) दि. 16.12.'07, रविवार — धनुर्मास प्रारंभ

(3) दि. 20.12.'07, गुरुवार — एकादशी – व्रत, श्रीमद् भगवद्गीता जयंती

(4) दि. 31.12.'07, सोमवार — दिल्ली – ताड़देव मंदिर में रात्रि 9:45 से 'मध्यरात्रि महापूजा'

(5) दि. 4.1.2008, शुक्रवार — एकादशी – व्रत

(6) दि. 13.1.'08, रविवार — लोहड़ी, प.पू. दीदी का प्राकट्य दिन

(7) दि. 14.1.'08, सोमवार — मकरसंक्रांति, धनुर्मास समाप्त, भिक्षा दिन

(8) दि. 19.1.'08, शनिवार — एकादशी – व्रत

(9) दि. 22.1.'08, मंगलवार — पौषी पूर्णिमा,
मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी का दीक्षा दिन

'अक्षरज्योति' – साध्वी बहनों का मात्र निवास स्थान नहीं,
बल्कि आत्मा की उर्ध्वगति के लिए प्रयाण स्थल है।
क्षणिक मुलाकात भी आत्मा के उत्थान के लिए पर्याप्त है।
अक्षरज्योति मानव समाज के उद्धार-कल्याण का अभूतपूर्व स्थान है।
अलौकिक सुंदरता का साक्षात् दर्शन यानि – अक्षरज्योति का दर्शन!

– आत्मीय श्री काशीरामभाई राणा साहेब, सांसद-सुरत

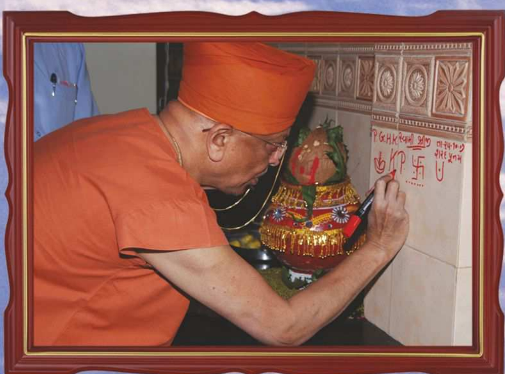

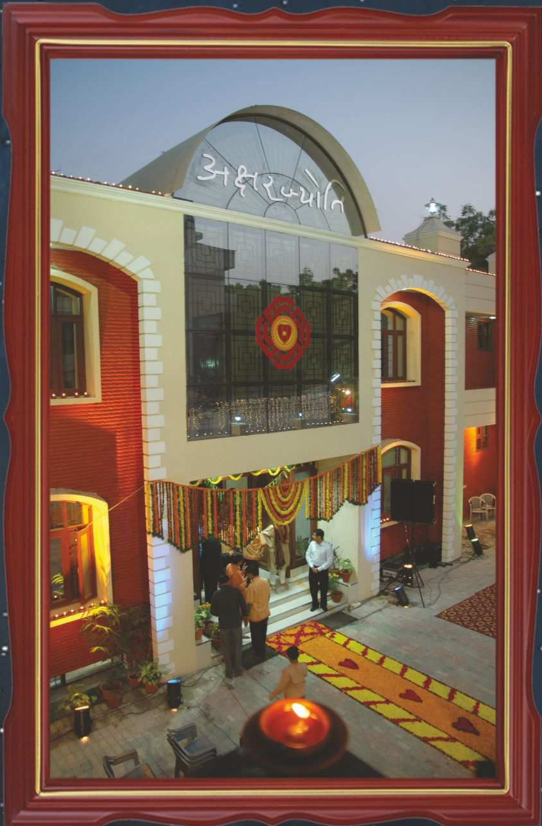

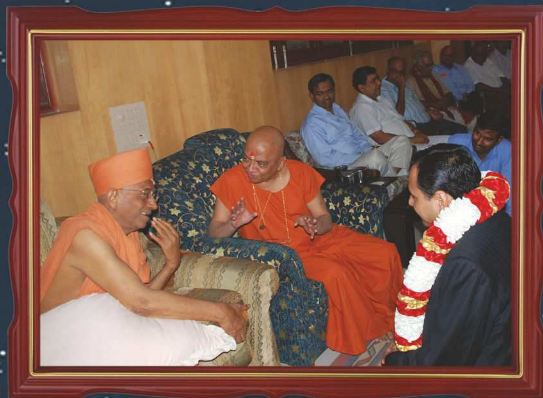

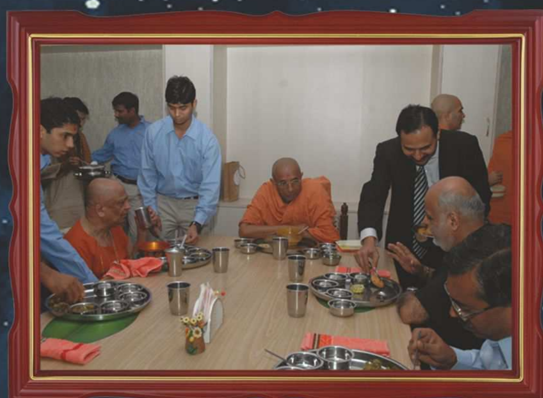

मुखपृष्ठ : 'अक्षरज्योति भवन' के उद्घाटन के अवसर पर कॅलेन्डर के रूप में दी स्मृति भेंट का प्रतिरूप।

R.N.I. 28971/ 77
Air Mail
'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine
Despatched on 15th of alternate months
If undelivered please return to :—
Printer, Publisher, Editor :—
SHRI PRABHAKER RAO
***FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**
'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,
Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2730 1327
Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.**
A 6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052